الجزء ١٩

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا

हम पर	उतारे गए	क्यों न	हम से मिलना	वह उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	और कहा

الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ۭ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ

और उन्हों ने सरकशी की	अपने दिलों में	तहक़ीक़ उन्हों ने तकब्बुर किया	अपना रब	या हम देख लेते	फ़रिश्ते

عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ

मुज्रिमों के लिए	उस दिन	नहीं ख़ुशख़बरी	फ़रिश्ते	वह देखेंगे	जिस दिन	21	बड़ी सरकशी

وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾ وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ

कोई काम	जो उन्हों ने किए	तरफ़	और हम आए (मुतवज्जुह होंगे)	22	रोकी हुई	कोई आड़ हो	और वह कहेंगे

فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا

ठिकाना	बहुत अच्छा	उस दिन	जन्नत वाले	23	बिखरा हुआ (परागन्दा)	गुबार	तो हम करदेंगे उन्हें

وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾ وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ

फ़रिश्ते	और उतारे जाएंगे	बादल से	आस्मान	फट जाएगा	और जिस दिन	24	आराम गाह	और बेहतरीन

تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ۨ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ۭ وَكَانَ يَوْمًا

वह दिन	और है-होगा	रहमान के लिए	सच्ची	उस दिन	बादशाहत	25	बकस्रत उतरना

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ

वह कहेगा	अपने हाथों को	ज़ालिम	काट खाएगा	और जिस दिन	26	सख़्त	काफ़िरों पर

يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ

काश मैं	हाए मेरी शामत	27	रास्ता	रसूल के साथ	पकड़ लेता	ऐ काश! मैं

لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِيْ ۭ

मेरे पास पहुँच गई	उस के बाद जब	नसीहत से	अलबत्ता उस ने मुझे बहकाया	28	दोस्त	फ़लां को	न बनाता

وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ

बेशक	ऐ मेरे रब	रसूल (स)	और कहेगा	29	खुला छोड़ जाने वाला	इन्सान को	शैतान	और है

قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ

हर नबी के लिए	हम ने बनाए	और इसी तरह	30	मतरूक (छोड़ने के क़ाबिल)	इस कुरआन को	ठहरा लिया उन्हों ने	मेरी क़ौम

عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾

31	और मददगार	हिदायत करने वाला	तुम्हारा रब	और काफ़ी है	गुनाहगारों (मुज्रिमीन)	से	दुश्मन

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ڔ

एक ही बार	कुरआन	उस पर	नाज़िल किया गया	क्यों न	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा

كَذٰلِكَ ڔ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾

32	ठहर ठहर कर	और हम ने उस को पढ़ा	तुम्हारा दिल	उस से	ताकि हम क़व्वी करें	इसी तरह

عدد المقدمين ١٢ ع ٧ م

और जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते, उन्हों ने कहा कि हम पर फ़रिश्ते क्यों न उतारे गए? या हम अपने रब को देख लेते, तहक़ीक़ उन्हों ने अपने दिलों में (अपने आप को) बड़ा समझा, और बड़ी सरकशी की। (21)

जिस दिन वह देखेंगे फ़रिश्तों को उस दिन मुज्रिमों के लिए कोई ख़ुशख़बरी नहीं होगी और वह कहेंगे कोई आड़ (पनाह) हो, रोकी हुई। (22)

और हम मुतवज्जुह होंगे उन के किए हुए कामों की तरफ़ तो हम उन्हें परागन्दा ग़ुबार की तरह करदेंगे। (23)

उस दिन जन्नत वाले बहुत अच्छे ठिकाने में और बेहतरीन आराम गाह में होंगे। (24)

और जिस दिन बादल से आस्मान फट जाएगा और फ़रिश्ते उतारे जाएंगे बकस्रत। (25)

उस दिन सच्ची बादशाही रहमान (अल्लाह) के लिए है, और वह दिन काफ़िरों पर सख़्त होगा। (26)

और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथों को काट खाएगा और कहेगा ऐ काश! मैं ने रसूल के साथ रास्ता पकड़ लिया होता। (27)

हाए मेरी शामत! काश मैं फ़लां को दोस्त न बनाता। (28)

अलबत्ता उस ने मुझे ज़िक्र के मामले में बहकाया, उस के बाद जब कि वह मेरे पास पहुँच गई, और शैतान इन्सान को (ऐन वक़्त पर) तन्हा छोड़ जाने वाला है। (29)

और रसूल (स) फ़रमाएगा ऐ मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने इस कुरआन को छोड़ने के क़ाबिल ठहरा लिया (मतरूक कर रखा)। (30)

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए दुश्मन बनाए गुनाहगारों में से। और तुम्हारा रब काफ़ी है हिदायत करने वाला और मददगार। (31)

और काफ़िरों ने कहा क्यों न उस पर कुरआन एक ही बार नाज़िल किया गया? इसी तरह (हम ने बतद्रीज नाज़िल किया) ताकि उस से तुम्हारा दिल मज़बूत करें और हम ने उस को पढ़ कर (सुनाया) ठहर ठहर कर। (32)

और वह तुम्हारे पास कोई बात नहीं लाते, मगर हम तुम्हें ठीक जवाब और बहतरीन वज़ाहत पहुँचा देते हैं। (33)
जो लोग अपने चेहरों के बल जहन्नम की तरफ़ जमा किए जाएंगे, वही लोग हैं बदतरीन मुक़ाम में और बहुत बहके हुए रास्ते से। (34)
और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को किताब दी और उस के साथ उस के भाई हारून (अ) को मुआविन बनाया। (35)
पस हम ने कहा तुम दोनों उस क़ौम की तरफ़ जाओ जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया तो हम ने उन्हें बुरी तरह हलाक कर के तबाह कर दिया। (36)
और क़ौमे नूह (अ) ने जब रसूलों को झुटलाया तो हम ने उन्हें ग़र्क़ कर दिया, और हम ने उन्हें लोगों के लिए एक निशानी (इब्रत) बनाया, और हम ने ज़ालिमों के लिए तैयार किया है एक दर्दनाक अज़ाब। (37)
और आद और समूद और कुएं वाले और उन के दरमियान बहुत सी नस्लें। (38)
और हम ने हर एक के लिए मिसालें बयान कीं (मगर उन्हों ने नसीहत न पकड़ी) और हर एक को तबाह कर के मिटा दिया। (39)
तहक़ीक़ वह आए उस (क़ौमे लूत अ की) बस्ती पर जिन पर (पत्थरों की) बुरी बारिश बरसाई गई, तो क्या वह उसे देखते नहीं रहते? बल्कि वह (दोबारा) जी उठने की उम्मीद नहीं रखते। (40)
और जब वह तुम्हें देखते हैं तो वह तुम्हारा सिर्फ़ ठट्ठा उड़ाते हैं (कहते हैं) क्या यह है वह जिसे अल्लाह ने रसूल (बना कर) भेजा? (41)
क़रीब था कि वह हमें हमारे माबूदों से बहका देता, अगर हम उस पर जमे न रहते, और वह जल्द जान लेंगे, जब वह अज़ाब देखेंगे, कौन है राहे (रास्त) से बदतरीन गुमराह! (42)
क्या तुम ने उसे देखा? जिस ने अपनी ख़ाहिश को अपना माबूद बना लिया है, तो क्या तुम उस पर निगहबान हो जाओगे? (43)
क्या तुम समझते हो कि उन में से अक्सर सुनते या अक़्ल से काम लेते हैं? वह नहीं हैं मगर चौपायों जैसे, बल्कि राहे (रास्त) से बदतरीन गुमराह हैं। (44)

وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ۝٣٣ اَلَّذِيْنَ

जो लोग	33	वज़ाहत	और बहतरीन	ठीक (जवाब)	हम पहुँचा देते हैं तुम्हें	मगर	कोई बात	और वह नहीं लाते तुम्हारे पास

يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ

और बहुत बहके हुए	मुक़ाम	बदतरीन	वही लोग	जहन्नम की तरफ़	अपने मुँह	पर-बल	जमा किए जाएंगे

سَبِيْلًا ۝٣٤ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ ع ١٤ ٣ ١

हारून (अ)	उस का भाई	उस के साथ	और हम ने बनाया	किताब	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दी	34	रास्ते से

وَزِيْرًا ۝٣٥ فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ فَدَمَّرْنٰهُمْ

तो हम ने तबाह कर दिया उन्हें	हमारी आयतें	जिन्हों ने झुटलाया	क़ौम की तरफ़	तुम दोनों जाओ	पस हम ने कहा	35	वज़ीर (मुआविन)

تَدْمِيْرًا ۝٣٦ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ

लोगों के लिए	और हम ने बनाया उन्हें	हम ने ग़र्क़ कर दिया उन्हें	रसूल (जमा)	जब उन्हों ने झुटलाया	और क़ौमे नूह (अ)	36	बुरी तरह हलाक

اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝٣٧ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۟

और समूद	और आद	37	दर्दनाक	एक अज़ाब	ज़ालिमों के लिए	और तैयार किया हम ने	एक निशानी

وَّاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ۝٣٨ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ

उस को	हम ने बयान कीं	और हर एक को	38	बहुत सी	उन के दरमियान	और नस्लें	और कुएं वाले

الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ۝٣٩ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ

बरसाई गई	वह जिस पर	बस्ती	पर	और तहक़ीक़ वह आए	39	तबाह कर के	हम ने मिटा दिया	और हर एक को	मिसालें

مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ

वह उम्मीद नहीं रखते	बल्कि	उस को देखते	तो क्या वह न थे	बुरी बारिश

نُشُوْرًا ۝٤٠ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا

क्या यह	तमस्ख़ुर (ठट्ठा)	मगर (सिर्फ़)	वह बनाते तुम्हें	नहीं	देखते हैं तुम्हें वह	और जब	40	जी उठना

الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝٤١ اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ

अगर न	हमारे माबूदों से	कि वह हमें बहका देता	क़रीब था	41	रसूल	भेजा अल्लाह ने	वह जिसे

اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۭ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ

अज़ाब	वह देखेंगे	जिस वक़्त	वह जान लेंगे	और जल्द	उस पर	हम जमे रहते

مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝٤٢ اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ۭ اَفَاَنْتَ

तो क्या तु	अपनी ख़ाहिश	अपना माबूद	जिस ने बनाया	क्या तुम ने देखा?	42	रास्ते से	कौन बदतरीन गुमराह

تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ۝٤٣ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ

सुनते हैं	उन के अक्सर	कि	क्या तुम समझते हो?	43	निगहबान	उस पर	हो जाएगा

اَوْ يَعْقِلُوْنَ ۭ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝٤٤ ع ٤ ٢

44	राह से	बदतरीन गुमराह	बल्कि वह	चौपायों जैसे	मगर	नहीं वह	या अक़्ल से काम लेते हैं

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ

फिर	साकिन	तो उसे बनादेता	और अगर वह चाहता	दराज़ किया साया	कैसे	अपना रब	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा

جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۙ﴿٤٥﴾ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿٤٦﴾

46	आहिस्ता आहिस्ता	खींचना	अपनी तरफ़	हम ने समेटा उस को	फिर	45	एक दलील	उस पर	सूरज	हम ने बनाया

وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ

और बनाया	राहत	और नीन्द	पर्दा	रात	तुम्हारे लिए	जिस ने बनाया	और वह

النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿٤٧﴾ وَهُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًا ۢ بَيْنَ

आगे	खुशख़बरी	भेजीं हवाएं	जिस ने	और वही	47	उठने का वक़्त	दिन

يَدَىْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ۙ﴿٤٨﴾ لِّنُحْيِىَ بِهٖ

ताकि हम ज़िन्दा कर दें उस से	48	पानी पाक	आस्मान से	और हम ने उतारा	अपनी रहमत

بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِىَّ كَثِيْرًا ﴿٤٩﴾

49	बहुत से	और आदमी	चौपाए	हम ने पैदा किया	उस से जो	और हम पिलाएं उसे	शहर मुर्दा

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٥٠﴾

50	नाशुक्री	मगर	अक्सर लोग	पस क़ुबूल न किया	ताकि वह नसीहत पकड़ें	उन के दरमियान	और तहक़ीक़ हम ने उसे तक़्सीम किया

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۖ﴿٥١﴾ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ

काफ़िरों	पस न कहा मानें आप (स)	51	एक डराने वाला	हर बस्ती	में	तो हम भेज देते	हम चाहते	और अगर

وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿٥٢﴾ وَهُوَ الَّذِىْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا

यह	दो दर्या	मिलाया	जिस ने	और वही	52	बड़ा जिहाद	इस के साथ	और जिहाद करें उन से

عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا

और आड़	एक पर्दा	उन दोनों के दरमियान	और उस ने बनाया	तल्ख़ बदमज़ा	और यह	खुशगवार	शीरीं

مَّحْجُوْرًا ﴿٥٣﴾ وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا

नसब	फिर बनाए उस के	बशर	पानी से	पैदा किया	जिस ने	और वही	53	मज़बूत आड़

وَّصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿٥٤﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	और वह बन्दगी करते हैं	54	क़ुदरत वाला	तेरा रब	और है	और सुस्राल

مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ

अपना रब	पर-ख़िलाफ़	काफ़िर	और है	और न उन का नुक़्सान कर सके	न नफ़ा पहुँचाए	जो

ظَهِيْرًا ﴿٥٥﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٥٦﴾ قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ

नहीं मांगता तुम से	फ़रमा दें	56	और डराने वाला	मगर खुशख़बरी देने वाला	भेजा हम ने आप को	और नहीं	55	पुश्त पनाही करने वाला

عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٥٧﴾

57	रास्ता	अपने रब तक	कि इख़्तियार करले	जो चाहे	मगर	अजर	कोई	इस पर

क्या तुम ने अपने रब की (क़ुदरत) की तरफ़ नहीं देखा, उस ने कैसे साए को दराज़ किया? और अगर वह चाहता तो उसे साकिन बना देता, फिर हम ने सूरज को उस पर एक दलील (रहनुमा) बनाया। (45) फिर हम ने उस (साए) को समेटा अपनी तरफ़ आहिस्ता आहिस्ता खींच कर। (46)

और वही है जिस ने तुम्हारे लिए रात को पर्दा, और नीन्द को राहत बनाया, और दिन को उठ (खड़े होने) का वक़्त बनाया। (47)

और वही है जिस ने अपनी रहमत के आगे हवाएं खुशख़बरी (सुनाती हुई) भेजीं, और हम ने आस्मान से पानी उतारा। (48)

ताकि उस में से मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दें। और हम उस से पिलाएं (उन्हें) जो हम ने पैदा किए हैं, बहुत से चौपाए और आदमी। (49)

और तहक़ीक़ हम ने उसे उन के दरमियान तक़्सीम किया ताकि वह नसीहत पकड़ें, पस अक्सर लोगों ने क़ुबूल न किया मगर नाशुक्री को। (50)

और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। (51)

पस आप (स) काफ़िरों का कहा न मानें और इस (हुक्मे इलाही) के साथ उन से बड़ा जिहाद करें। (52)

और वही है जिस ने दो दर्याओं को मिलाया (मिला कर चलाया) यह (इस तरफ़ का पानी) खुशगवार शीरीं है और यह (दूसरा) तल्ख़ बदमज़ा है, और उस ने उन दोनों के दरमियान (एक ग़ैर महसूस) पर्दा और मज़बूत आड़ बनाई। (53)

और वही है जिस ने पैदा किया पानी से बशर, फिर बनाए उस के नसब (नसबी रिश्ते) और सुस्राल, और तेरा रब क़ुदरत वाला है। (54)

और वह बन्दगी करते हैं अल्लाह के सिवा उस की जो उन्हें नफ़ा न पहुँचाए, और न उन का नुक़्सान कर सके, और काफ़िर अपने रब के ख़िलाफ़ पुश्त पनाही करने वाला है। (55)

और हम ने आप (स) को नहीं भेजा मगर (सिर्फ़) खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला। (56)

आप (स) फ़रमा दें: मैं इस पर तुम से नहीं मांगता कोई अजर, मगर जो शख़्स चाहे अपने रब तक रास्ता इख़्तियार कर ले। (57)

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ

और भरोसा कर	हमेशा ज़िन्दा रहने वाले पर	जिसे मौत नहीं	और पाकीज़गी बयान कर	उस की तारीफ़ के साथ	और काफ़ी है वह

بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرَا ۚۛ ﴿٥٨﴾ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

गुनाहों से	अपने बन्दों की	ख़बर रखने वाला	58	वह जिस ने	पैदा किया	आस्मान (जमा)	और ज़मीन

وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ ع ٨ عدد المتقدمين ١٢

और जो उन दोनों के दरमियान	में	छः (6) दिन	फिर क़ाइम हुआ	अ़र्श पर	जो रहम करने वाला	तो पूछो

بِهٖ خَبِيْرًا ﴿٥٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ ۚ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ق

उस के मुतअ़ल्लिक़	किसी बाख़बर	59	और जब	कहा जाए	उन से	तुम सिज्दा करो	रहमान को	वह कहते हैं	और क्या है रहमान

اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ﴿٦٠﴾ السجدة تَبٰرَكَ الَّذِىْ جَعَلَ ع ١٦ ٣ السجدة ٧

क्या हम सिज्दा करें	जिसे तू सिज्दा करने को कहे	उस ने बढ़ा दिया उन का	बिदकना	60	बड़ी बरकत वाला है	वह जिस ने	बनाए

فِى السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿٦١﴾

आस्मानों में	बुर्ज (जमा)	और बनाया	उस में	चिराग़ (सूरज)	और चाँद	रोशन	61

وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ

और वही	जिस ने बनाया	रात	और दिन	एक दूसरे के पीछे आने वाला	उस के लिए जो चाहे	कि वह नसीहत पकड़े

اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾ وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ

या चाहे	शुक्र गुज़ार बनना	62	और रहमान के बन्दे	वह कि	चलते हैं	ज़मीन पर

هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ

नरम चाल	और जब	उन से बात करते हैं	जाहिल (जमा)	कहते हैं वह	सलाम	63	और वह जो	रात काटते हैं

لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا

अपने रब के लिए	सिज्दा करते	और क़ियाम करते	64	और वह जो	कहते हैं	ऐ हमारे रब	फेर दे	हम से

عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾ ق اِنَّهَا سَآءَتْ

जहन्नम का अ़ज़ाब	बेशक	उस का अ़ज़ाब	लाज़िम हो जाने वाला है	65	बेशक वह	बुरी

مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٦٦﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ

ठहरने की जगह	और (बुरा) मुक़ाम	66	और वह लोग जो	जब वह ख़र्च करते हैं	न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं	और न

يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ

तंगी करते हैं	और है	उस के दरमियान	एतिदाल	67	और वह जो	नहीं पुकारते

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِىْ حَرَّمَ اللّٰهُ

अल्लाह के साथ	कोई माबूद	दूसरा	और वह क़त्ल नहीं करते	जान	जिसे	हराम किया अल्लाह ने

اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾

मगर जहां हक़ हो	और वह ज़िना नहीं करते	और जो	करेगा	यह	वह दो चार होगा बड़ी सज़ा	68

और उस हमेशा रहने वाले पर भरोसा करो जिसे मौत नहीं, और उस की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान कर, और काफ़ी है वह अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने वाला। (58)
वह जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को, और जो उन के दरमियान है, छः दिन में, फिर अ़र्श पर क़ाइम हुआ, रहम करने वाला, उस के मुतअ़ल्लिक़ किसी बाख़बर से पूछो। (59)
और जब उन से कहा जाए कि तुम रहमान को सिज्दा करो तो वह कहते हैं क्या है रहमान? क्या तू जिसे सिज्दा करने को कहे हम उसे सिज्दा करें? उस (बात) ने उन का बिदकना और बढ़ा दिया। (60)
बड़ी बरकत वाला है वह जिस ने बुर्ज बनाए और उस में बनाया सूरज और रोशन चाँद। (61)
और वही है जिस ने रात दिन को एक दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, यह उस के (समझने) के लिए है जो चाहे कि नसीहत पकड़े या शुक्र गुज़ार बनना चाहे। (62)
और रहमान के बन्दे वह हैं जो ज़मीन पर नरम चाल चलते हैं, और जब जाहिल उन से बात करते हैं तो वह बस (सलाम) कहते हैं। (63)
और वह अपने रब के लिए रात काटते हैं (रात भर लगे रहते हैं) सिज्दा करते और क़ियाम करते। (64)
और वह कहते हैं ऐ हमारे रब! हम से जहन्नम का अ़ज़ाब फेर दे, बेशक उस का अ़ज़ाब लाज़िम हो जाने वाला है (जुदा न होने वाला है)। (65)
बेशक वह बुरी है ठहरने की जगह और बुरा मुक़ाम है। (66)
और वह लोग कि जब वह ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं, और न तंगी करते हैं (उन की रविश) उस के दरमियान एतिदाल की है। (67)
और वह जो अल्लाह के साथ नहीं पुकारते दूसरा (कोई और) माबूद, और उस जान को क़त्ल नहीं करते जिसे (क़त्ल करना) अल्लाह ने हराम किया है, मगर जहां हक़ हो, और वह ज़िना नहीं करते, और जो यह करेगा वह बड़ी सज़ा से दोचार होगा। (68)

يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ اِلَّا

सिवाए	69	ख़ार हो कर	उस में	और वह हमेशा रहेगा	रोज़े क़ियामत	अ़ज़ाब	उस के लिए	दोचन्द कर दिया जाएगा

مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ

उन की बुराइयां	अल्लाह बदल देगा	पस यह लोग	नेक अ़मल	और अ़मल किए उस ने	और वह ईमान लाया	जिस ने तौबा की

حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا

नेक	और अ़मल किए	और जिस ने तौबा की	70	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	और है अल्लाह	भलाइयों से

فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ

झूट	गवाही नहीं देते	और वह लोग जो	71	रुजूअ़ करने का मुक़ाम	अल्लाह की तरफ़	रुजूअ़ करता है	तो बेशक वह

وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

उन के रब के अहकाम से	जब उन्हें नसीहत की जाती है	और वह लोग जो	72	बुज़ुरगाना	गुज़रते हैं	बेहूदा से	वह गुज़रें	और जब

لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا

ऐ हमारे रब अ़ता फ़रमा हमें	कहते हैं वह	और वह लोग जो	73	और अँधों की तरह	बहरों की तरह	उन पर	नहीं गिर पड़ते

مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾

74	इमाम (पेश्वा)	परहेज़गारों का	और बना दे हमें	ठंडक आँखों की	और हमारी औलाद	हमारी बीवियां	से

اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾ ۙ

75	और सलाम	दुआए ख़ैर	और पेश्वाई किए जाएंगे उस में	उन के सब्र की बदौलत	बाला ख़ाने	इन्आम दिए जाएंगे	यह लोग

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٧٦﴾ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ

तुम्हारी	परवाह नहीं रखता	फ़रमा दें	76	और मस्कन	आरामगाह	अच्छी है	उस में	वह हमेशा रहेंगे

الربع ع ١٧/٤ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

77	लाज़मी	होगी	पस अनक़रीब	झुटलाया तुम ने	अगर न पुकारो तुम	मेरा रब

آيَاتُهَا ٢٢٧ ❀ سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ (٢٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١١

रुकुआत 11 — (26) सूरतुश शुअ़रा / शायर (जमा) — आयात 227

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

المنزل ٥ طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ

हलाक कर लोगे	शायद तुम	2	रोशन किताब	आयतें	यह	1	ता सीन मीम

نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ

उन पर	हम उतार दें	अगर हम चाहें	3	ईमान लाते	कि वह नहीं	अपने तईं

مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ﴿٤﴾

4	पस्त	उस के आगे	उन की गर्दनें	तो हो जाएं	कोई निशानी	आस्मान से

रोज़े क़ियामत उस के लिए अ़ज़ाब दोचन्द कर दिया जाएगा, और वह उस में हमेशा रहेगा, ख़ार हो कर। (69) सिवाए उस के जिस ने तौबा की, और वह ईमान लाया, और उस ने नेक अ़मल किए, पस अल्लाह उन लोगों की बुराइयां बदल देगा भलाइयों से, और अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (70) और जिस ने तौबा की और नेक अ़मल किए तो बेशक वह रुजूअ़ करता है अल्लाह की तरफ़ (जैसे) रुजूअ़ करने का मुक़ाम (हक़) है। (71) और वह लोग जो झूट की गवाही नहीं देते और जब बेहूदा चीज़ों के पास से गुज़रें तो गुज़रते हैं बुज़ुर्गाना (सन्जीदगी के अन्दाज़ से)। (72) और वह लोग कि जब उन्हें उन के रब के अहकाम से नसीहत की जाती है तो वह उन पर नहीं गिर पड़ते बहरों और अँधों की तरह। (73) और वह लोग जो वह कहते हैं ऐ हमारे रब! हमें हमारी बीवियों और हमारी औलाद से आँखों की ठंडक अ़ता फ़रमा, और हमें बनादे परहेज़गारों का पेश्वा। (74) उन लोगों को उन के सब्र की बदौलत (जन्नत के) बाला ख़ाने इन्आम दिए जाएंगे और वह उस में दुआए ख़ैर और सलाम से पेश्वाई किए जाएंगे। (75) वह उस में हमेशा रहेंगे, (क्या ही) अच्छी है आरामगाह और अच्छा मस्कन। (76) आप (स) फ़रमा दें अगर तुम उस को न पुकारो, तो मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं रखता, अब कि तुम ने झुटलाया, पस अनक़रीब (उस की सज़ा) लाज़िमी होगी। (77)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ता-सीन-मीम। (1) यह रोशन किताब की आयतें हैं। (2) शायद आप (स) (उन के ग़म में) अपने तईं हलाक कर लेंगे कि वह ईमान नहीं लाते। (3) अगर हम चाहें तो उन पर आस्मान से कोई निशानी उतार दें, तो उस के आगे उन की गर्दनें पस्त हो जाएं। (4)

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ

उस से	हो जाते हैं वह	मगर	नई	रहमान	(तरफ़) से	कोई नसीहत	और नहीं आती उन के पास

مُعْرِضِيْنَ ۝٥ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ

उस का	जो वह थे	ख़बरें	तो जल्द आएंगी उन के पास	पस बेशक उन्हों ने झुटलाया	5	रूगरदान

يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٦ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ

हर क़िस्म	उस में	उगाईं हम ने	किस क़द्र	ज़मीन की तरफ़	क्या उन्हों ने नहीं देखा?	6	मज़ाक़ उड़ाते

زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝٧ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨

8	ईमान लाने वाले	उन में अक्सर	और नहीं हैं	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	7	उम्दा जोड़ा जोड़ा

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٩ ع وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ

कि तू जा	मूसा (अ)	तुम्हारा रब	पुकारा (फ़रमाया)	और जब	9	रहम करने वाला	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक

الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ۝١١ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	उस ने कहा	11	क्या वह मुझ से नहीं डरते	क़ौमे फ़िरऔन	10	ज़ालिम लोग

اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝١٢ وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ

मेरी ज़बान	और नहीं चलती	मेरा सीना (दिल)	और तंग होता है	12	वह मुझे झुटलाएंगे	कि	बेशक मैं डरता हूँ

فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ۝١٣ وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝١٤

14	कि वह मुझे क़त्ल (न) कर दें	पस मैं डरता हूँ	एक इल्ज़ाम	मुझ पर	और उनका	13	हारून	तरफ़	पस पैग़ाम भेज

قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ۝١٥ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ

फ़िरऔन	पस तुम दोनों जाओ	15	सुनने वाले	तुम्हारे साथ	बेशक हम	पस तुम दोनों जाओ हमारी निशानियों के साथ	हरगिज़ नहीं	फ़रमाया

فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٦ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝١٧

17	बनी इस्राईल	हमारे साथ	तू भेज दे	कि	16	तमाम जहानों का रब	बेशक हम रसूल	तो उसे कहो

قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۝١٨

18	कई बरस	अपनी उम्र के	हमारे दरमियान	और तू रहा	बचपन में	अपने दरमियान	क्या हम ने तुझे नहीं पाला	फ़िरऔन ने कहा

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٩ قَالَ فَعَلْتُهَآ

मैं ने वह किया था	मूसा (अ) ने कहा	19	नाशुक्रे	से	और तू	जो तू ने किया	अपना (वह) काम	और तू ने किया

اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۝٢٠ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ

पस अ़ता किया मुझे	जब मैं डरा तुम से	तुम से	तो मैं भाग गया	20	राह से बेख़बर (जमा)	से	और मैं	जब

رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٢١ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ

तू उस का एहसान रखता है मुझ पर	नेमत	और यह	21	रसूल (जमा)	से	और मुझे बनाया	हुक्म	मेरा रब

اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝٢٢ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٣

23	सारे जहान	रब	और क्या है	फ़िरऔन ने कहा	22	बनी इस्राईल	कि तू ने ग़ुलाम बनाया

और उन के पास रहमान की तरफ़ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वह उस से रूगर्दान हो जाते हैं। (5)
पस बेशक उन्हों ने झुटलाया तो जल्द उन के पास उस की ख़बरें आएंगी (हक़ीक़त मालूम हो जाएगी) जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते हैं। (6)
क्या उन्हों ने ज़मीन की तरफ़ नहीं देखा? कि हम ने उस में किस क़द्र उम्दा उम्दा हर क़िस्म की चीज़ें जोड़ा जोड़ा उगाई हैं। (7)
बेशक उस में अलबत्ता निशानी है, और उन में अक्सर नहीं हैं ईमान लाने वाले। (8)
और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। (9)
और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने मूसा (अ) को फ़रमाया कि ज़ालिम लोगों के पास जाओ। (10)
(यानी) क़ौमे फ़िरऔन के पास, क्या वह मुझ से नहीं डरते? (11)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं डरता हूँ (मुझे अन्देशह है) कि वह मुझे झुटलाएंगे। (12)
और मेरा दिल तंग होता है, और मेरी ज़बान (ख़ूब) नहीं चलती, पस हारून (अ) की तरफ़ पैग़ाम भेज। (13)
और उन का मुझ पर एक इल्ज़ाम (भी) है, पस मुझे डर है कि वह मुझे क़त्ल न कर दें। (14)
फ़रमाया हरगिज़ नहीं, तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, बेशक हम तुम्हारे साथ हैं सुनने वाले। (15)
पस तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ तो उसे कहो कि बेशक हम तमाम जहानों के रब के रसूल हैं। (16)
कि तू भेज दे हमारे साथ बनी इस्राईल को। (17)
फ़िरऔन ने कहा क्या हम ने तुझे बचपन में नहीं पाला? और तू हमारे दरमियान रहा अपनी उम्र के कई बरस। (18)
और तू ने वह काम किया जो तू ने किया (एक क़बती का क़त्ल हो गया) और तू नाशुक्रों में से है। (19)
मूसा (अ) ने कहा मैं ने वह किया था जब मैं राह से बेख़बरों में से था। (20)
जब मैं तुम से ड़रा तो मैं तुम से भाग गया, पस मेरे रब ने मुझे हुक्म अ़ता किया (नबूव्वत दी) और मुझे रसूलों में से बनाया। (21)
और यह नेमत जिस का तू मुझ पर एहसान रखता है? कि तू ने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बनाया। (22)
फ़िरऔन ने कहा, और क्या है सारे जहान का रब! (23)

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾

24	यक़ीन करने वाले	तुम हो	अगर	और जो उन के दरमियान	और ज़मीन	रब है आस्मानों का	उस ने कहा

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗۤ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ

तुम्हारे बाप दादा	और रब	तुम्हारा रब	(मूसा अ) ने कहा	25	क्या तुम सुनते नहीं	उस के इर्द गिर्द	उन्हें जो	उस से कहा

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾

27	अलबत्ता दीवाना	तुम्हारी तरफ़	भेजा गया	वह जो	तुम्हारा रसूल	बेशक	फ़िरऔन बोला	26	पहले

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	तुम समझते हो	अगर	उन दोनों के दरमियान	और जो	और मग़रिब	मश्रिक़	रब	मूसा (अ) ने कहा

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾

29	क़ैदी (जमा)	से	तो मैं ज़रूर करदूँगा तुझे	मेरे सिवा	कोई माबूद	तू ने बनाया	अलबत्ता अगर	वह बोला

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ

से	अगर तू है	तू ले आ उसे	वह बोला	30	वाज़ेह	एक शै (मोजिज़ा)	अगरचे मैं लाऊँ तेरे पास	(मूसा अ) ने कहा

الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿٣٢﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ

अपना हाथ	और उस ने खींचा (निकाला)	32	खुला (नुमायां)	अज़दहा	तो अचानक वह	अपना असा	पस मूसा (अ) ने डाला	31	सच्चे

ع ٢ ٢٣ ٦ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ

जादूगर	बेशक यह	अपने गिर्द	सरदारों से	फ़िरऔन ने कहा	33	देखने वालों के लिए	चमकता हुआ	तो यकायक वह

عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	तो क्या तुम हुक्म (मश्वरा) देते हो	अपने जादू से	तुम्हारी सर ज़मीन	से	तुम्हें निकाल दे	कि	यह चाहता है	34	दाना, माहिर

قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٣٦﴾ يَاْتُوْكَ

ले आएं तेरे पास	36	इकट्ठा करने वाले (नक़ीब)	शह्रों	में	और भेज	और उस के भाई को	मोहलत दे उसे	वह बोले

بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿٣٧﴾ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٣٨﴾

38	जाने पहचाने (मुअय्यन)	एक दिन	मुक़र्ररा वक़्त पर	जादूगर	पस जमा किए गए	37	माहिर	तमाम बड़े जादूगर

وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿٣٩﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ

अगर	जादूगर (जमा)	पैरवी करें	ताकि हम	39	जमा होने वाले हो (जमा होगे)	तुम	क्या	लोंगों से	और कहा गया

كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا

क्या यक़ीनन हमारे लिए	फ़िरऔन से	उन्हों ने कहा	जादूगर	आए	पस जब	40	ग़ालिब (जमा)	हों वह

لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ

अलबत्ता-से	उस वक़्त	और बेशक तुम	हां	उस ने कहा	41	ग़ालिब (जमा)	हम	हम हुए	अगर	कुछ इन्आम

الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٤٣﴾

43	डालने वाले	तुम	जो	तुम डालो	मूसा (अ)	उन से	कहा	42	मुक़र्रबीन

मूसा (अ) ने कहाः रब है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उन के दरमियान है, अगर तुम यक़ीन करने वाले हो। (24)

उस ने अपने इर्द गिर्द वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं! (25)

मूसा (अ) ने कहाः रब है तुम्हारा और रब है तुम्हारे पहले बाप दादा का। (26)

फ़िरऔन बोला, बेशक तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है अलबत्ता दीवाना है। (27)

मूसा (अ) ने कहाः रब है मश्रिक़ का और मग़रिब का, और जो उन दोनों के दरमियान है, अगर तुम समझते हो। (28)

वह बोला, अलबत्ता अगर तू ने कोई और माबूद बनाया मेरे सिवा, तो मैं ज़रूर तुझे क़ैद करदूँगा। (29)

मूसा (अ) ने कहा अगरचे मैं तेरे पास एक वाज़ेह मोजिज़ा लाऊँ? (30)

वह बोला तू उसे ले आ अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (31)

पस मूसा (अ) ने अपना असा डाला तो वह अचानक नुमायां अज़दहा बन गया। (32)

और उस ने अपना हाथ (गरेबान से) निकाला तो नागाह वह देखने वालों के लिए चमकता दिखाई देने लगा। (33)

फ़िरऔन ने अपने इर्द गिर्द के सरदारों से कहा बेशक यह माहिर जादूगर है। (34)

वह चाहता है कि तुम्हें अपने जादू (के ज़ोर) से तुम्हारी सर ज़मीन से निकाल दे तो तुम क्या मशवरा देते हो? (35)

वह बोले उसे और उस के भाई को मोहलत दे, और शह्रों में नक़ीब भेज। (36)

कि तेरे पास तमाम बड़े माहिर जादूगर ले आएं। (37)

पस जादूगर जमा हो गए, एक मुअय्यन दिन, वक़्त मुक़र्रर पर। (38)

और लोंगों से कहा गया क्या तुम जमा होगे? (39)

ताकि हम पैरवी करें जादूगरों की, अगर वह ग़ालिब हूँ। (40)

जब जादूगर आए तो उन्हों ने फ़िरऔन से कहा क्या हमारे लिए यक़ीनी तौर पर कुछ इन्आम होगा? अगर हम ग़ालिब आए। (41)

उस ने कहा हां! तुम उस वक़्त बेशक (मेरे) मुक़र्रबीन में से होगे। (42)

कहा मूसा (अ) ने उन से (अपना दाओ) डालो जो तुम डालने वाले हो। (43)

पस उन्हों ने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं, और वह बोले कि बेशक फ़िरऔन के इक़्बाल से हम ही ग़ालिब आने वाले हैं। (44)
पस मूसा (अ) ने अपना असा डाला तो वह नागाह निगलने लगा जो उन्हों ने ढकोसला बनाया था। (45)
पस जादूगर सिज्दा करते हुए गिर पड़े। (46)
वह बोले कि हम ईमान लाए सारे जहानों के रब पर। (47)
(जो) रब है मूसा (अ) का और हारून (अ) का। (48)
फ़िरऔन ने कहा तुम उस पर (इस से) पहले ईमान ले आए कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, बेशक वह अलबत्ता तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया, पस तुम जल्द जान लोगे, मैं ज़रूर तुम्हारे हाथ पाऊँ काट डालूँगा, दूसरी तरफ़ के (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ) और मैं ज़रूर तुम सब को सूली दूँगा। (49)
वह बोले कुछ हर्ज नहीं बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (50)
हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताएं बख़्शदेगा, कि हम पहले ईमान लाने वाले हैं। (51)
और हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि की कि रातों रात मेरे बन्दों को ले कर निकल, बेशक तुम पीछा किए जाओगे (तुम्हारा तआक़ुब होगा)। (52)
पस भेजा फ़िरऔन ने शहरों में नक़ीब। (53)
बेशक यह लोग एक थोड़ी (छोटी सी) जमाअत हैं। (54)
और वह बेशक हमें गुस्से में लाने वाले (गुस्सा दिला रहे हैं)। (55)
और बेशक हम एक जमाअत हैं मुसल्लह, मोहतात। (56)
(इरशादे इलाही): पस हम ने उन्हें बाग़ात और चश्मों से निकाला। (57)
और ख़ज़ानों और उम्दा ठिकानों से। (58)
इसी तरह हम ने उन का वारिस बनाया बनी इस्राईल को। (59)
पस उन्हों ने सूरज निकलते (सुब्ह सवेरे) उन का पीछा किया। (60)
पस जब दोनों जमाअतों ने एक दूसरे को देखा तो मूसा (अ) के साथी कहने लगे, यक़ीनन हम पकड़ लिए गए। (61)
मूसा (अ) ने कहा, हरगिज़ नहीं, बेशक मेरा रब मेरे साथ है, वह मुझे जल्द (बच निकलने की) राह दिखाएगा। (62)
पस हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी कि तू अपना असा दर्या पर मार (उन्हों ने मारा) तो दर्या फट गया, पस हर हिस्सा बड़े बड़े पहाड़ की तरह हो गया। (63)
और हम ने उस जगह दूसरों (फ़िरऔनियों) को क़रीब कर दिया। (64)

فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ

बेशक अलबत्ता हम	फ़िरऔन	इक़्बाल से	और बोले वह	और अपनी लाठियां	अपनी रस्सियां	पस उन्हों ने डाले

الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿٤٥﴾

45	जो उन्हों ने ढकोसला बनाया	निगलने लगा	तो यकायक वह	अपना असा	मूसा (अ)	पस डाला	44	ग़ालिब आने वाले

فَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾ رَبِّ مُوْسٰى

मूसा (अ)	रब	47	सारे जहानों के रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले	46	सिज्दा करते हुए	पस डाल दिए गए (गिर पड़े) जादूगर

وَهٰرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِىْ

जिस ने	अलबत्ता बड़ा है तुम्हारा	बेशक वह	तुम्हें	इजाज़त दूँ	कि मैं	पहले	तुम ईमान लाए उस पर	(फ़िरऔन) ने कहा	48	और हारून (अ)

عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۬ؕ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

और तुम्हारे पैर	तुम्हारे हाथ	अलबत्ता मैं ज़रूर काट डालूँगा	तुम जान लोगे	पस जल्द	जादू	सिखाया तुम्हें

مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٩﴾ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۫ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا

अपने रब की तरफ़	बेशक हम	कुछ नुक़्सान (हर्ज) नहीं	वह बोले	49	सब को	और ज़रूर तुम्हें सूली दूँगा	एक दूसरे के ख़िलाफ़ का	से - कि

مُنْقَلِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ

पहले	कि हम हैं	हमारी ख़ताएं	हमारा रब	हमें	बख़्शदे	कि	बेशक हम उम्मीद रखते हैं	50	लौट कर जाने वाले हैं

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥١﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِىْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾ ع ١٨ ٣

52	पीछा किए जाओगे	बेशक तुम	मेरे बन्दों को	कि तू रातों रात ले निकल	मूसा (अ)	तरफ़	और हम ने वहि की	51	ईमान लाने वाले

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ

एक जमाअत	यह लोग हैं	बेशक	53	इकट्ठा करने वाले (नक़ीब)	शहरों में	फ़िरऔन	पस भेजा

قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾

56	मुसल्लह - मोहतात	एक जमाअत	और बेशक हम	55	गुस्से में लाने वाले	हमें	और बेशक वह	54	थोड़ी सी

فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ ؕ

उसी तरह	58	उम्दा	और ठिकाने	और ख़ज़ाने	57	और चश्मे	बाग़ात	से	पस हम ने उन्हें निकाला

وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَآءَ

देखा एक दूसरे को	पस जब	60	सूरज निकलते	पस उन्हों ने पीछा किया उन का	59	बनी इस्राईल	और हम ने वारिस बनाया उन का

الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ

मेरे साथ	बेशक	उस ने कहा हरगिज़ नहीं	61	पकड़ लिए गए	यक़ीनन हम	मूसा (अ) के साथी	कहा (कहने लगे)	दोनों जमाअतें

رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ

दर्या	अपना असा	तू मार	कि	मूसा (अ)	तरफ़	पस हम ने वहि भेजी	62	वह जल्द मुझे राह दिखाएगा	मेरा रब

فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾

64	दूसरों को	उस जगह	फिर हम ने क़रीब कर दिया	63	बड़े	पहाड़ की तरह	हर हिस्सा	पस हो गया	तो वह फट गया

وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾

66	दूसरों को	हम ने ग़र्क़ कर दिया	फिर	65	सब	उस के साथ	और जो	मूसा (अ)	और हम ने बचा लिया

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	और बेशक	67	ईमान लाने वाले	उन से अक्सर	थे	और न	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक

ع ١٧ ٨ وقف لازم

لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ

अपने बाप को	उस ने कहा	जब	69	इब्राहीम (अ)	ख़बर-वाक़िआ	उन पर-उन्हें	और आप पढ़ें	68	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह

وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾

71	जमे हुए	पस हम बैठे रहते हैं उन के पास	बुतों की	हम परस्तिश करते हैं	उन्हों ने कहा	70	तुम परस्तिश करते हो	क्या-किस	और अपनी क़ौम

قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾

73	या वह नुक़्सान पहुँचाते हैं	या वह नफ़ा पहुँचाते हैं तुम्हें	72	तुम पुकारते हो	जब	वह सुनते हैं तुम्हारी	क्या	उस ने कहा

قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا

किस	क्या पस तुम ने देखा	इब्राहीम (अ) ने कहा	74	वह करते	इसी तरह	अपने बाप दादा	हम ने पाया	बल्कि	वह बोले

كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْۤ

मेरे दुश्मन	तो बेशक वह	76	पहले	और तुम्हारे बाप दादा	तुम	75	तुम परस्तिश करते हो

اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾ الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِيْ هُوَ

वह	और वह जो	78	मुझे राह दिखाता है	पस वह	मुझे पैदा किया	वह जिस ने	77	सारे जहानों का रब	मगर

يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ﴿٧٩﴾ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِيْ

और वह जो	80	मुझे शिफ़ा देता है	तो वह	मैं बीमार होता हूँ	और जब	79	और मुझे पिलाता है	मुझे खिलाता है

يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْۤ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓـَٔتِيْ

मेरी ख़ताएं	कि मुझे बख़्श देगा	मैं उम्मीद रखता हूँ	और वह जिस से	81	मुझे ज़िन्दा करेगा	फिर	मौत देगा

يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾

83	नेक बन्दों के साथ	और मुझे मिलादे	हुक्म-हिक्मत	मुझे अ़ता कर	ऐ मेरे रब	82	बदले के दिन

وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ

वारिसों में से	और तू मुझे बना दे	84	बाद में आने वालों में	अच्छा-ख़ैर	मेरे लिए-मेरा ज़िक्र	और कर

جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾ وَاغْفِرْ لِاَبِيْۤ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٨٦﴾

86	गुमराह (जमा)	से	वह है	बेशक वह	मेरे बाप को	और बख़्शदे	85	नेमतों वाली	जन्नत

وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾

88	बेटे	और न	माल	न काम आएगा	जिस दिन	87	जिस दिन सब उठाए जाएंगे	और मुझे रुस्वा न करना

اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩٠﴾

90	परहेज़गारों के लिए	जन्नत	और नज़दीक कर दी जाएगी	89	पाक	दिल	अल्लाह के पास आया	जो	मगर

और हम ने मूसा (अ) को और जो उन के साथ थे सब को बचा लिया। (65) फिर हम ने दूसरों को ग़र्क़ कर दिया। (66) बेशक उस में अलबत्ता एक निशानी है, और उन में से अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (67) और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब, निहायत मेहरबान है। (68) और आप (स) उन्हें इब्राहीम (अ) का वाक़िआ पढ़ कर (सुनाएं)। (69) जब उन्हों ने कहा अपने बाप और अपनी क़ौम को, तुम किस की परस्तिश करते हो? (70) उन्हों ने कहा बुतों की परस्तिश करते हैं, पस हम उन के पास जमे बैठे रहते हैं। (71) उस ने कहा क्या वह तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारते हो? (72) या वह तुम्हें नफ़ा पहुँचाते हैं? या नुक़्सान पहुँचा सकते हैं? (73) वह बोले (नहीं तो)। बल्कि हम ने अपने बाप दादा को इसी तरह करते पाया है। (74) इब्राहीम (अ) ने कहा: पस क्या तुम ने देखा (ग़ौर भी किया) कि तुम किस की परस्तिश करते हो? (75) और तुम्हारे पहले बाप दादा? (76) तो बेशक वह मेरे दुश्मन हैं सिवाए सारे जहानों के रब के। (77) वह जिस ने मुझे पैदा किया, पस वही मुझे राह दिखाता है। (78) और वही जो मुझे खिलाता है और वही मुझे पिलाता है। (79) और जब मैं बीमार होता हूँ तो वह मुझे शिफ़ा देता है। (80) और वह जो मुझे मौत (से हमकिनार) करेगा, फिर मुझे ज़िन्दा करेगा। (81) और वह जिस से मैं उम्मीद रखता हूँ कि मुझे बदले के दिन मेरी ख़ताएं बख़्श देगा। (82) ऐ मेरे रब! मुझे हुक्म और हिक्मत अ़ता फ़रमा, और मुझे नेक बन्दों के साथ मिला दे। (83) और मेरा ज़िक्रे ख़ैर (जारी) रख बाद में आने वालों में। (84) और मुझे नेमतों वाली जन्नत के वारिसों में से बना दे। (85) और मेरे बाप को बख़्शदे, बेशक वह गुमराहों में से है। (86) और मुझे उस दिन रुस्वा न करना जब सब उठाए जाएंगे। (87) जिस दिन न काम आएगा माल और न बेटे। (88) मगर जो अल्लाह के पास सलीम (बे ऐब) दिल ले कर आया। (89) और जन्नत परहेज़गारों के नज़दीक कर दी जाएगी। (90)

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩١﴾ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٢﴾

92	तुम परस्तिश करते थे	कहां हैं वह जो	उन्हें	और कहा जाएगा	91	गुमराहों के लिए	दोज़ख़	और ज़ाहिर कर दी जाएगी

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا

पस औन्धे मुँह डाले जाएंगे उस में	93	या बदला ले सकते हैं	वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं	क्या	अल्लाह के सिवा

هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٤﴾ وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٥﴾ قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا

उस (जहन्नम) में	और वह	वह कहेंगे	95	सब के सब	इब्लीस	और लशकर (जमा)	94	और गुमराह	वह

يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٦﴾ تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٧﴾ اِذْ نُسَوِّيْكُمْ

हम बराबर ठहराते थे तुम्हें	जब	97	खुली	गुमराही	अलबत्ता में	बेशक हम थे	क़सम अल्लाह की	96	झगड़ते होंगे

بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا مِنْ شٰفِعِيْنَ ﴿١٠٠﴾

100	सिफ़ारिश करने वाले	कोई	पस नहीं हमारे लिए	99	मुजरिम (जमा)	मगर (सिर्फ़)	और नहीं गुमराह किया हमें	98	सारे जहानों के रब के साथ

وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102	मोमिन (जमा)	से	तो हम होते	लौटना	कि हमारे लिए	पस काश	101	ग़म ख़ार	कोई दोस्त	और न

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	और बेशक	103	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	और नहीं है	अलबत्ता एक निशानी	उस में	बेशक

لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٠٥﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ

ع ٥ ٩

उन से	जब कहा	105	रसूलों को	नूह (अ) की क़ौम	झुटलाया	104	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह

اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

पस डरो अल्लाह से	107	रसूल अमानत दार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	106	तुम डरते	क्या नहीं	नूह (अ)	उन के भाई

وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى

पर	मगर (सिर्फ़)	मेरा अजर	नहीं	अजर	कोई	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	108	और मेरी इताअ़त करो

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١١٠﴾ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ

जब कि तेरी पैरवी की	तुझ पर	क्या हम ईमान ले आएं	वह बोले	110	और मेरी इताअ़त करो	पस डरो अल्लाह से	109	सारे जहां का पालने वाला

الْاَرْذَلُوْنَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٢﴾ اِنْ حِسَابُهُمْ

उन का हिसाब	नहीं	112	वह करते थे	उस की जो	और मुझे क्या इल्म	कहा (नूह अ) ने	111	रज़ीलों ने

اِلَّا عَلٰى رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٤﴾ اِنْ اَنَا

नहीं मैं	114	मोमिन (जमा)	हांकने वाला (दूर करने वाला)	मैं	और नहीं	113	तुम समझो	अगर	मेरे रब पर	मगर (सिर्फ़)

اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ

तो ज़रूर होंगे	ऐ नूह (अ)	तुम बाज़ न आए	अगर	बोले वह	115	साफ़ तौर पर	डराने वाला	मगर-सिर्फ़

مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ﴿١١٦﴾ قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ كَذَّبُوْنِ ﴿١١٧﴾

117	मुझे झुटलाया	मेरी क़ौम	बेशक	ऐ मेरे रब	(नूह अ ने) कहा	116	संगसार किए जाने वाले	से

और दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी गुमराहों के लिए। (91)
और उन्हें कहा जाएगा कहां हैं वह जिन की तुम परस्तिश करते थे। (92)
अल्लाह के सिवा क्या वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं? या (ख़ुद) बदला ले सकते हैं? (93)
पस वह और गुमराह उस (जहन्नम) में औन्धे मुँह डाले जाएंगे। (94)
और इब्लीस के लशकर सब के सब। (95)
वह कहेंगे जब कि वह जहन्नम में (बाहम) झगड़ते होंगे। (96)
अल्लाह की क़सम! बेशक हम खुली गुमराही में थे। (97)
जब हम तुम्हें सारे जहानों के रब के साथ बराबर ठहराते थे। (98)
और हमें सिर्फ़ मुजरिमों ने गुमराह किया। (99)
पस हमारा कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं। (100)
और न कोई ग़म ख़ार दोस्त है। (101)
पस काश हमारे लिए दोबारा (दुनिया में) लौटना होता तो हम मोमिनों में से होते। (102)
बेशक उस में अलबत्ता एक निशानी है, और नहीं हैं उन में अक्सर ईमान लाने वाले। (103)
और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। (104)
नूह (अ) की क़ौम ने झुटलाया रसूलों को। (105)
(याद करो) जब उन के भाई नूह (अ) ने उन से कहा तुम डरते नहीं? (106)
बेशक मैं तुम्हारे लिए रसूल हूँ अमानतदार। (107)
पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (108)
मैं इस पर तुम से नहीं मांगता कोई अजर, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आ़लमीन पर है। (109)
पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (110)
वह बोले क्या हम तुझ पर ईमान ले आएं? जब कि तेरी पैरवी रज़ीलों ने की है। (111)
नूह (अ) ने कहा मुझे क्या इल्म वह क्या (काम काज) करते थे। (112)
उन का हिसाब सिर्फ़ मेरे रब पर है, अगर तुम समझो। (113)
और मैं मोमिनों को (अपने पास से) दूर करने वाला नहीं। (114)
मैं तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ तौर पर डराने वाला हूँ। (115)
बोले ऐ नूह (अ)! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर संगसार कर दिए जाओगे। (116)
नूह (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने मुझे झुटलाया। (117)

النصف

فَافْتَحْ بَيْنِىْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِىْ وَمَنْ مَّعِىَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

118	ईमान वाले	से	मेरे साथी	और जो	और नजात दे मुझे	एक खुला फ़ैसला	और उन के दरमियान	मेरे दरमियान	पस फ़ैसला कर दे

فَاَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ

उस के बाद	ग़र्क़ कर दिया हम ने	फिर	119	भरी हुई	कश्ती में	उस के साथ	और जो	तो हम ने नजात दी उसे

الْبَاقِيْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

121	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	थे	और न	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	120	बाक़ियों को

ع ١٨ ٦ ١٠
وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٢﴾ كَذَّبَتْ عَادُ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾

123	रसूल (जमा)	आद	झुटलाया	122	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٢٥﴾

125	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	124	क्या तुम डरते नहीं	हूद (अ)	उन के भाई	उन से	जब कहा

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٢٦﴾ وَمَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ

मेरा अजर	नहीं	कोई अजर	उस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	126	और मेरी इताअ़त करो	सो तुम डरो अल्लाह से

اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٧﴾ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿١٢٨﴾

128	खेलने को (बिला ज़रूरत)	एक निशानी	हर बुलन्दी पर	क्या तुम तामीर करते हो	127	सारे जहां का पालने वाला	पर	मगर (सिर्फ़)

وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ

गिरिफ़्त करते हो तुम	तुम गिरिफ़्त करते हो	और जब	129	तुम हमेशा रहोगे	शायद तुम	मज़बूत शानदार महल	और तुम बनाते हो

جَبَّارِيْنَ ﴿١٣٠﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٣١﴾ وَاتَّقُوا الَّذِىْٓ اَمَدَّكُمْ

मदद की तुम्हारी	वह जिस ने	और डरो	131	और मेरी इताअ़त करो	पस डरो अल्लाह से	130	जाबिर बन कर

بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ﴿١٣٣﴾ وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٣٤﴾

134	और चश्मे	और बाग़ात	133	और बेटों	मवेशियों से	तुम्हारी मदद की	132	उस से जो तुम जानते हो

اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣٥﴾ قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ

ख़ाह तुम नसीहत करो	हम पर	बराबर	वह बोले	135	एक बड़ा दिन	अ़ज़ाब	तुम पर	बेशक मैं डरता हूँ

اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿١٣٦﴾ اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣٧﴾ وَمَا

और नहीं	137	अगले लोग	आदत	मगर	नहीं है	136	नसीहत करने वाले	से	या न हो तुम

نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿١٣٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ

अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	तो हम ने हलाक कर दिया उन्हें	पस उन्हों ने झुटलाया उसे	138	अ़ज़ाब दिए जाने वालों में से	हम

ع ١٨ ٧ ١١
وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٤٠﴾

140	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक	139	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	और नहीं थे

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٤١﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٤٢﴾

142	क्या तुम डरते नहीं	सालेह (अ)	उन के भाई	उन से	कहा	जब	141	रसूल (जमा)	समूद	झुटलाया

पस मेरे और उन के दरमियान एक खुला फ़ैसला फ़रमा दे, और मुझे नजात दे, और (उन्हें) जो मेरे साथी ईमान वाले हैं। (118) तो हम ने उसे और जो उस के साथ भरी हुई कश्ती में सवार थे (उन्हें) नजात दी। (119) फिर उस के बाद हम ने बाक़ियों को ग़र्क़ कर दिया। (120) बेशक उस में एक निशानी है, और उन के अक्सर न थे ईमान लाने वाले। (121) और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। (122) (क़ौमे) आद ने रसूलों को झुटलाया। (123) जब उन से उन के भाई हूद (अ) ने कहा क्या तुम डरते नहीं? (124) बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। (125) सो तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअ़त करो। (126) और मैं तुम से कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन पर है। (127) क्या तुम हर बुलन्दी पर बिला ज़रूरत एक निशानी तामीर करते हो? (128) और तुम बनाते हो मज़बूत, शानदार महल कि शायद तुम हमेशा रहोगे। (129) और जब तुम (किसी पर) गिरिफ़्त करते हो तो जाबिर (ज़ालिम) बन कर गिरिफ़्त करते हो। (130) पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (131) और उस से डरो जिस ने उस से तुम्हारी मदद की जो तुम जानते हो। (132) (यानी) मवेशियों और बेटों से तुम्हारी मदद की। (133) और बाग़ात और चश्मों से। (134) बेशक मैं तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से डराता हूँ। (135) वह बोले, बराबर है हम पर ख़ाह तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में से न हो। (136) (कुछ भी) नहीं है, मगर आदत है अगले लोगों की। (137) और हम अ़ज़ाब दिए जाने वालों में से नहीं। (138) फिर उन्हों ने उसे झुटलाया और हम ने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक उस में निशानी है और न थे उन के अक्सर ईमान लाने वाले। (139) और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब निहायत मेहरबान है। (140) (क़ौमे) समूद ने रसूलों को झुटलाया। (141) जब उन में से उन के भाई सालेह (अ) ने कहा क्या तुम डरते नहीं? (142)

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٤٤﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ

इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	144	और मेरी इताअ़त करो	सो तुम डरो अल्लाह से	143	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं

مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤٥﴾ أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هَاهُنَا

जो यहां है	में	क्या छोड़ दिए जाओगे तुम?	145	सारे जहां का पालने वाला	पर	मगर	मेरा अजर	नहीं	कोई अजर

آمِنِينَ ﴿١٤٦﴾ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾ وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٨﴾

148	नर्म ओ नाज़ुक	उन के ख़ोशे	और खजूरें	और खेतियां	147	और चश्मे	बाग़ात में	146	बेफ़िक्र

وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَارِهِينَ ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٥٠﴾

150	और मेरी इताअ़त करो	सो डरो अल्लाह से	149	खुश हो कर	घर	पहाड़ों से	और तुम तराशते हो

وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٥١﴾ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ

ज़मीन	में	फ़साद करते हैं	जो लोग	151	हद से बढ़ जाने वाले	हुक्म	और न कहा मानो

وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٥٣﴾ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ

मगर (सिर्फ़) एक बशर	तुम नहीं	153	सिहरज़दा लोग	से	तुम	इस के सिवा नहीं	उन्हों ने कहा	152	और इस्लाह नहीं करते

مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٥٤﴾ قَالَ هَٰذِهِ نَاقَةٌ لَهَا

उस के लिए	ऊँटनी	यह	उस ने कहा	154	सच्चे लोग से	तू	अगर	कोई निशानी	पस लाओ	हम जैसा

شِرْبٌ وَلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَعْلُومٍ ﴿١٥٥﴾ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ

सो (वरना) तुम्हें आ पकड़ेगा	बुराई से	और उसे हाथ न लगाना	155	दिन मालूम	एक बारी पानी पीने की	और तुम्हारे लिए	पानी पीने की बारी

عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥٦﴾ فَعَقَرُوهَا فَأَصْبَحُوا نَادِمِينَ ﴿١٥٧﴾ فَأَخَذَهُمُ

फिर उन्हें आ पकड़ा	157	पशेमान	पस रह गए	फिर उन्हों ने कूचें काट दीं उस की	156	एक बड़ा दिन	अ़ज़ाब

الْعَذَابُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٥٨﴾

158	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	है	और नहीं	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	अ़ज़ाब

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٥٩﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٦٠﴾

ع ٨ ١٩ ١٢

160	रसूलों को	क़ौमे लूत (अ)	झुटलाया	159	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾

162	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	161	क्या तुम डरते नहीं	लूत (अ)	उन के भाई	उन से	कहा	जब

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ

मेरा अजर	नहीं	कोई अजर	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	163	और मेरी इताअ़त करो	पस तुम डरो अल्लाह से

إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٤﴾ أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾

165	तमाम जहानों	से	मर्दों के पास	क्या तुम आते हो	164	सारे जहां का पालने वाला	पर	मगर-सिर्फ़

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٦﴾

166	हद से बढ़ने वाले	लोग	तुम	बल्कि	तुम्हारी बीवियां	से	तुम्हारा रब	तुम्हारे लिए	जो उस ने पैदा किया	और तुम छोड़ते हो

बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। (143)
सो तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअ़त करो। (144)
और मैं तुम से इस पर कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आ़लमीन पर है। (145)
क्या तुम यहां की चीज़ों (नेमतों) में बेफ़िक्र छोड़ दिए जाओगे? (146)
बाग़ात और चश्मों में। (147)
और खेतियों और नख़्लिस्तानों में जिन के ख़ोशे रस भरे हैं। (148)
और तुम ख़ुश हो कर पहाड़ों से घर तराशते हो। (149)
सो अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (150)
और तुम हद से बढ़ जाने वालों का कहा न मानो। (151)
वह जो फ़साद करते हैं ज़मीन में, और इस्लाह नहीं करते। (152)
उन्हों ने कहा इस के सिवा नहीं कि तुम सिहरज़दा लोगों में से हो। (153)
तुम नहीं मगर (सिर्फ़) हम जैसे एक बशर हो, पस अगर तुम सच्चे लोगों में से हो (सच्चे हो) तो कोई निशानी ले आओ। (154)
सालेह (अ) ने फ़रमाया यह ऊँटनी है, एक मुअ़य्यन दिन उस के पानी पीने की बारी है और (एक दिन) तुम्हारे लिए पानी पीने की बारी है। (155)
और उसे बुराई से हाथ न लगाना वरना तुम्हें आ पकड़ेगा एक बड़े दिन का अ़ज़ाब। (156)
फिर उन्हों ने उस की कूचें काट दीं पस पशेमान रह गए। (157)
फिर उन्हें अ़ज़ाब ने आ पकड़ा, बेशक उस (वाक़े) में अलबत्ता निशानी (बड़ी इब्रत) है और उन के अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। (158)
और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब निहायत मेहरबान है। (159)
क़ौमे लूत (अ) ने रसूलों को झुटलाया। (160)
(याद करो) जब उन के भाई लूत (अ) ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं? (161)
बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। (162)
पस तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअ़त करो। (163)
और मैं तुम से नहीं मांगता इस पर कोई अजर, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आ़लमीन पर है। (164)
क्या तुम मर्दों के पास (बद फ़ेली) के लिए आते हो? दुनिया जहानों में से। (165)
और तुम छोड़ देते हो (उन्हें) जो तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां पैदा की हैं, (नहीं) बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो। (166)

قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿١٦٧﴾ قَالَ اِنِّيْ

बेशक मैं	उस ने कहा	167	मुख़्रिज (बाहर निकाले जाने वाले)	से	अलबत्ता तुम ज़रूर होगे	ऐ लूत (अ)	तुम बाज़ न आए	अगर	बोले वह

لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ فَنَجَّيْنٰهُ

तो हम ने नजात दी उसे	169	वह करते हैं	उस से जो	और मेरे घर वालों	मुझे नजात दे	ऐ मेरे रब	168	नफ़्रत करने वाले	से	तुम्हारे अ़मल से

وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٧٢﴾

172	दूसरे	फिर हम ने हलाक कर दिया	171	पीछे रह जाने वालों में	एक बुढ़िया	सिवाए	170	सब	और उस के घर वाले

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ

अलबत्ता एक निशानी	उस में	बेशक	173	डराए गए	बारिश	पस बुरी	एक बारिश	उन पर	और हम ने बारिश बरसाई

ع ٩ ١٦ ١٣ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾

175	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक	174	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	थे	और न

كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ

शुऐब (अ)	उन्हें	जब कहा	176	रसूल (जमा)	एयका (बन) वाले	झुटलाया

اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾

179	और मेरी इताअ़त करो	सो डरो तुम अल्लाह से	178	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	177	क्या तुम डरते नहीं

وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾

180	सारे जहां का पालने वाला	पर	मगर-सिर्फ़	मेरा अजर	नहीं	कोई अजर	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से

اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ

तराज़ू से	और वज़न करो	181	नुक़्सान देने वाले	से	और न हो तुम	माप	तुम पूरा करो

الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ

ज़मीन में	और न फिरो	उन की चीज़ें	लोग	और न घटाओ	182	ठीक सीधी

مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾ وَاتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٨٤﴾

184	पहली	और मख़्लूक़	पैदा किया तुम्हें	वह जिस ने	और डरो	183	फ़साद मचाते हुए

قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٨٥﴾ وَمَاۤ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

हम जैसा	एक बशर	मगर-सिर्फ़	और नहीं तू	185	सिहरज़दा (जमा)	से	तू	इस के सिवा नहीं	वह बोले (कहने लगे)

وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿١٨٦﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से-का	एक टुकड़ा	हम पर	सो तू गिरा	186	झूटे	अलबत्ता-से	और अलबत्ता हम गुमान करते हैं तुझे

اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّيْۤ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ

तो उन्हों ने झुटलाया उसे	188	तुम करते हो	जो कुछ	खूब जानता है	मेरा रब	कहा	187	सच्चे	से	अगर तू है

فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٨٩﴾

189	बड़ा (सख़्त) दिन	अ़ज़ाब	था	बेशक वह	साइबान वाला दिन	अ़ज़ाब	पस पकड़ा उन्हें

वह बोले ऐ लूत (अ)! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर (बस्ती से) निकाल दिए जाओगे। (167)
उस ने कहा बेशक मैं तुम्हारे फ़ेले (बद) से नफ़्रत करने वालो में से हूँ। (168)
ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे घर वालों को उस (के वबाल) से नजात दे जो वह करते हैं। (169)
तो हम ने उसे नजात दी और उस के सब घर वालों को। (170)
सिवाए एक बुढ़िया जो रह गई पीछे रह जाने वालों में। (171)
फिर हम ने दूसरों को हलाक कर दिया। (172)
और हम ने उन पर (पत्थरों की) बारिश बरसाई। पस किया ही बुरी बारिश (उन पर जिन्हें अ़ज़ाब से) डराया गया। (173)
बेशक उस में एक निशानी है और न उन के अक्सर ईमान लाने वाले थे। (174)
और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब, निहायत मेहरबान है। (175)
झुटलाया एयका (बन) वालों ने रसूलों को। (176)
(याद करो) जब शुऐब (अ) ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं? (177)
बेशक मैं तुम्हारे लिए रसूल हूँ अमानतदार। (178)
सो अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (179)
और मैं तुम से इस पर कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आ़लमीन पर है। (180)
तुम माप पूरा करो, और नुक़्सान देने वालों में से न हो। (181)
और वज़न करो ठीक सीधी तराज़ू से। (182)
और लोगों को उन की चीज़े घटा कर न दो, और ज़मीन में न फिरो फ़साद मचाते हुए। (183)
और डरो उस (ज़ाते पाक) से जिस ने तुम्हें पैदा किया और पहली मख़्लूक़ को। (184)
कहने लगे इस के सिवा नहीं कि तू सिहरज़दा लोगों में से है। (185)
और तू सिर्फ़ हम जैसा एक बशर है, और अलबत्ता हम तुझे झूटों में से गुमान करते हैं। (186)
सो तू हम पर आस्मान का एक टुकड़ा गिरा दे अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (187)
शुऐब (अ) ने फ़रमाया, मेरा रब खूब जानता है जो कुछ तुम करते हो। (188)
तो उन्हों ने उसे झुटलाया, पस उन्हें (आग के) साइबान वाले दिन अ़ज़ाब ने आ पकड़ा। बेशक वह बडे सख़्त दिन का अ़ज़ाब था। (189)

बेशक उस में निशानी है, और उन के
अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (190)
और बेशक तेरा रब ग़ालिब है,
निहायत मेहरबान। (191)
और बेशक यह (क़ुरआन) सारे जहानों
के रब का उतारा हुआ है। (192)
उस को ले कर उतरा है जिब्रील
अमीन (अ)। (193)
तुम्हारे दिल पर, ताकि तुम डर
सुनाने वालों में से हो। (194)
रोशन वाज़ेह अ़रबी ज़बान में। (195)
और बेशक यह (इस का ज़िक्र) पहले
पैग़म्बरों के सहीफ़ों में है। (196)
क्या यह उन के लिए एक निशानी
नहीं? कि इसे जानते हैं
उल्माए बनी इस्राईल। (197)
और अगर हम इसे किसी ग़ैर अ़रबी
(ज़बान दान) पर नाज़िल करते। (198)
फिर वह इसे उन के सामने पढ़ता
(फिर भी) वह इस पर ईमान लाने
वाले न होते (ईमान न लाते)। (199)
इसी तरह हम ने मुज्रिमों के दिलों में
इन्कार दाख़िल कर दिया है। (200)
वह उस पर ईमान न लाएंगे यहां
तक कि वह दर्दनाक अ़ज़ाब (न)
देख लें। (201)
तो वह उन पर अचानक आजाएगा
और उन्हें ख़बर भी न होगी। (202)
फिर वह कहेंगे क्या हमें मोहलत दी
जाएगी। (203)
पस क्या वह हमारे अ़ज़ाब को
जल्दी चाहते हैं? (204)
क्या तुम ने देखा (ज़रा देखो)? अगर हम
उन्हें बरसों फ़ाइदा पहुँचाएं। (205)
फिर उन पर पहुँचे जिस की उन्हें
वईद की जाती थी। (206)
जिस से वह फ़ाइदा उठाते थे उन
के क्या काम आएगा? (207)
और हम ने किसी बस्ती को हलाक
नहीं किया, मगर उस के लिए
डराने वाले। (208)
नसीहत के लिए (पहले भेजे) और
हम ज़ुल्म करने वाले न थे। (209)
और इस (क़ुरआन) को शैतान
ले कर नहीं उतरे। (210)
और उन को सज़ावार नहीं (वह
उस के क़ाबिल नहीं) और न वह
(ऐसा) कर सकते हैं। (211)
बेशक वह सुनने (के मुक़ाम) से दूर
कर दिए गए हैं। (212)
पस अल्लाह के साथ किसी और को
माबूद न पुकारो कि मुब्तिलाए अ़ज़ाब
लोगों में से हो जाओ। (213)
और तुम अपने क़रीब तरीन
रिश्तेदारों को डराओ। (214)
और उस के लिए अपने बाज़ू
झुकाओ जिस ने तुम्हारी पैरवी की
मोमिनों में से। (215)

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹۰﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

तेरा रब	और बेशक	190	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	और न थे	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक

لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۹۱﴾ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۹۲﴾ نَزَلَ بِهِ ع ١٠ ١٦ ١٤

इस के साथ (ले कर) उतरा	192	सारे जहानों का रब	अलबत्ता उतारा हुआ	और बेशक यह	191	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	वह

الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿۱۹۳﴾ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿۱۹۴﴾ بِلِسَانٍ

ज़बान में	194	डर सुनाने वालों में से	ताकि तुम हो	तुम्हारे दिल	पर	193	जिब्रील अमीन (अ)

عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ﴿۱۹۵﴾ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۹۶﴾ اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً

एक निशानी	उन के लिए	क्या नहीं है	196	पहले (पैग़म्बर)	सहीफ़े	में	और बेशक यह	195	रोशन (वाज़ेह)	अ़रबी

اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۹۷﴾ وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿۱۹۸﴾

198	अ़जमी (ग़ैर अ़रबी)	किसी पर	हम नाज़िल करते इसे	और अगर	197	बनी इस्राईल	उल्मा	कि जानते हैं इस को

فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹۹﴾ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ

यह चलाया है (इन्कार दाख़िल कर दिया है) दिलों में	इसी तरह	199	ईमान लाने वाले	इस पर	वह होते	न	उन के सामने	फिर वह पढ़ता इसे

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۲۰۰﴾ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿۲۰۱﴾ فَيَاْتِيَهُمْ

तो वह आजाएगा उन पर	201	दर्दनाक अ़ज़ाब	वह देख लेंगे	यहां तक कि	इस पर	वह ईमान न लाएंगे	200	मुज्रिमीन

بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۰۲﴾ فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ﴿۲۰۳﴾

203	मोहलत दी जाएगी	हम-हम	क्या	फिर वह कहेंगे	202	ख़बर (भी) न होगी	और उन्हें	अचानक

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۲۰۴﴾ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ﴿۲۰۵﴾ ثُمَّ

फिर	205	कई बरसों	हम उन्हें फ़ाइदा पहुँचाएं	अगर	क्या तुम ने देखा?	204	वह जल्दी चाहते हैं	क्या पस हमारे अ़ज़ाब को

جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿۲۰۶﴾ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ﴿۲۰۷﴾

207	वह फ़ाइदा उठाते थे	जो (जिस से)	उन के	क्या काम आएगा?	206	उन्हें वईद की जाती थी	जो	पहुँचे उन पर

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ﴿۲۰۸﴾ ذِكْرٰى ۛ وَمَا كُنَّا ع ٩ عدد المتقدمين ١٢

और न थे हम	नसीहत के लिए	208	डराने वाले	उस के लिए	मगर	किसी बस्ती को	और नहीं हलाक किया हम ने

ظٰلِمِيْنَ ﴿۲۰۹﴾ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿۲۱۰﴾ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ

उन को	और सज़ा वार नहीं	210	शैतान (जमा)	इसे ले कर	और नहीं उतरे	209	ज़ुल्म करने वाले

وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿۲۱۱﴾ اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿۲۱۲﴾ فَلَا تَدْعُ

पस न पुकारो	212	दूर कर दिए गए हैं	सुनना	से	बेशक वह	211	और न वह कर सकते हैं

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿۲۱۳﴾ وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ

अपने रिश्तेदार	और तुम डराओ	213	मुब्तिलाए अ़ज़ाब	से	कि हो जाओ	कोई दूसरा माबूद	अल्लाह के साथ

الْاَقْرَبِيْنَ ﴿۲۱۴﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۱۵﴾

215	मोमिनीन	से	तुम्हारी पैरवी की	उस के लिए जिस ने	अपना बाज़ू	और झुकाओ	214	क़रीब तरीन

فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّىْ بَرِىْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ

ग़ालिब	पर	और भरोसा करो	216	तुम करते हो	उस से जो	बेशक मैं बेज़ार हूँ	तो कह दें	वह तुम्हारी नाफ़रमानी करें	फिर अगर

الرَّحِيْمِ ﴿٢١٧﴾ الَّذِىْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٢١٨﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِى السّٰجِدِيْنَ ﴿٢١٩﴾

219	सिज्दा करने वाले (नमाज़ी)	में	और तुम्हारा फिरना	218	तुम खड़े होते हो	जब	तुम्हें देखता है	वह जो	217	निहायत मेह्रबान

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٢٠﴾ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢٢١﴾

221	शैतान (जमा)	उतरते हैं	किस पर	मैं तुम्हें बताऊँ	क्या	220	जानने वाला	सुनने वाला	वही	बेशक वह

تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٢٢﴾ يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿٢٢٣﴾

223	झूटे	और उन में अक्सर	सुनी सुनाई बात	डाल दिए हैं	222	गुनाहगार	बुहतान लगाने वाला	हर	पर	वह उतरते हैं

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿٢٢٤﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِىْ كُلِّ وَادٍ

हर वादी में	कि वह	क्या तुम ने नहीं देखा	224	गुमराह लोग	उन की पैरवी करते हैं	और शायर (जमा)

يَّهِيْمُوْنَ ﴿٢٢٥﴾ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٢٢٦﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	मगर	226	वह करते नहीं	जो	वह कहते हैं	और यह कि वह	225	सरगर्दां फिरते हैं

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	और उन्हों ने बदला लिया	बकसरत	और अल्लाह को याद किया	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए

ع ١١ ٣٦ ١٥
مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَىَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿٢٢٧﴾

227	वह उलटते हैं (उन्हें लौट कर जाना है)	लौटने की जगह (करवट)	किस	ज़ुल्म किया	वह लोग जिन्हों ने	और अ़नक़रीब जान लेंगे	कि उन पर ज़ुल्म हुआ

آياتها ٩٣ ❀ سُوْرَةُ النَّمْلِ (٢٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

रुकूआत 7 — (27) सूरतुन नमल चीटीयाँ — आयात 93

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

طٰسٓ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾ هُدًى

हिदायत	1	रोशन, वाज़ेह	और किताब	क़ुरआन	आयतें	यह	ता सीन

وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ

ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	क़ाइम रखते हैं	जो लोग	2	मोमिनों के लिए	और ख़ुशख़बरी

وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

आख़िरत पर	ईमान नहीं लाते	जो लोग	बेशक	3	यक़ीन रखते हैं	वह	आख़िरत पर	और वह

زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	यही लोग	4	भटकते फिरते हैं	पस वह	उन के अ़मल	आरास्ता कर दिखाए हम ने उन के लिए

لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٥﴾

5	सब से बढ़ कर ख़सारा उठाने वाले	वह	आख़िरत में	और वह	अ़ज़ाब	बुरा	उन के लिए

फिर अगर तुम्हारी नाफ़रमानी करें तो कह दें जो तुम करते हो बेशक मैं उस से बेज़ार हूँ। (216) और तुम भरोसा करो ग़ालिब, निहायत मेह्रबान पर। (217) जो तुम्हें देखता है जब तुम (नमाज़ में) खड़े होते हो। (218) और नमाज़ियों में तुम्हारा फिरना (भी देखता है)। (219) बेशक वही सुनने वाला जानने वाला है। (220) क्या मैं तुम्हें बताऊँ किस पर शैतान उतरते हैं? (221) वह उतरते हैं बुहतान लगाने वाले, गुनाहगार पर। (222) (शैतान) सुनी सुनाई बात (उन के कान में) डाल देते हैं और उन में अक्सर झूटे हैं। (223) और (रहे) शायर उन की पैरवी गुमराह लोग करते हैं। (224) क्या तुम ने नहीं देखा? कि वह हर वादी में सरगर्दां फिरते हैं। (225) और यह कि वह कहते हैं जो वह करते नहीं। (226) सिवाए उन के जो ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, और अल्लाह को याद किया बकसरत, और उन्हों ने उस के बाद बदला लिया कि उन पर ज़ुल्म हुआ, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया वह अ़नक़रीब जान लेंगे कि किस करवट उन्हें लौट कर जाना है। (227)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

तासीन - यह आयतें हैं क़ुरआन और रोशन वाज़ेह किताब की। (1) हिदायत और ख़ुशख़बरी मोमिनों के लिए। (2) जो लोग नमाज़ क़ाइम रखते हैं, और ज़कात अदा करते हैं, और आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (3) बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के अ़मल उन के लिए आरास्ता कर दिखाए हैं, पस वह भटकते फिरते हैं। (4) यही हैं वह लोग जिन के लिए बुरा अ़ज़ाब है, और वह आख़िरत में सब से बढ़ कर ख़सारा उठाने वाले हैं। (5)

الثلثة

وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿٦﴾ اِذْ قَالَ مُوْسٰى

मूसा (अ)	कहा	जब	6	इल्म वाला	हिक्मत वाला	नज़्दीक (जानिब) से	कुरआन	दिया जाता है	और बेशक तुम

لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ

अंगारा	शोला	या लाता हूँ तुम्हारे पास	कोई ख़बर	उस की	मैं अभी लाता हूँ	एक आग	मैं ने देखी है	बेशक मैं	अपने घर वालों से

لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٧﴾ فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ

आग में	जो	कि बरकत दिया गया	आवाज़ दी गई	उस (आग) के पास आया	पस जब	7	तुम सेंको	ताकि तुम

وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨﴾ يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ

मैं अल्लाह	हक़ीक़त यह	ऐ मूसा (अ)	8	परवरदिगार सारे जहानों का	और पाक है अल्लाह	उस के आस पास	और जो

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٩﴾ لا وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ

सांप	गोया कि वह	लहराता हुआ	उसे देखा	पस जब उस ने	अपना असा	और तू डाल	9	हिक्मत वाला	ग़ालिब

وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ قف اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ

मेरे पास	ख़ौफ़ नहीं खाते	बेशक मैं	तू ख़ौफ़ न खा	ऐ मूसा (अ)	और मुड़ कर न देखा	वह लौट गया पीठ फेर कर

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٠﴾ ق صلے اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًاۢ بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّيْ

तो बेशक मैं	बुराई	बाद	भलाई	फिर उस ने बदल डाला	ज़ुल्म किया	जो-जिस	मगर	10	रसूल (जमा)

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١﴾ وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ

से-के	सफ़ेद-रोशन	वह निकलेगा	अपने गरेबान में	अपना हाथ	और दाख़िल कर (डाल)	11	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला

غَيْرِ سُوْٓءٍ قف فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا

हैं	बेशक वह	और उस की क़ौम	फ़िरऔन	तरफ़	नौ (9) निशानियां	में	किसी ऐब के बग़ैर

قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿١٢﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا

यह	वह बोले	आँखें खोलने वाली	हमारी निशानियां	आईं उन के पास	फिर जब	12	नाफ़रमान	क़ौम

سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾ ج وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ

और तकब्बुर से	ज़ुल्म से	उन के दिल	हालांकि उस का यक़ीन था	उस का	और उन्हों ने इन्कार किया	13	जादू खुला

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤﴾ ع وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ ع ١٤ ١٦

दाऊद (अ)	और तहक़ीक़ दिया हम ने	14	फ़साद करने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा	तो देखो

وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ج وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ

अपने बन्दे	से	अक्सर	पर	फ़ज़ीलत दी हमें	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और उन्हों ने कहा	बड़ा इल्म	और सुलेमान (अ)

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾ وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا

हमें सिखाई गई	ऐ लोगो	और उस ने कहा	दाऊद (अ)	सुलेमान (अ)	और वारिस हुआ	15	मोमिनीन

مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

16	खुला	फ़ज़्ल	अलबत्ता वही	यह	बेशक	हर चीज़ से	से	और हमें दी गई	परिन्दे (जमा)	बोली

और बेशक तुम्हें कुरआन हिक्मत वाले इल्म वाले की तरफ़ से दिया जाता है। (6)
(याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने घर वालों से कहा बेशक मैं ने देखी है एक आग, मैं अभी तुम्हारे पास उस की कोई ख़बर लाता हूँ या आग का अंगारा तुम्हारे पास लाता हूँ ताकि तुम सेंको। (7)
पस जब वह आग के पास आया (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) निदा दी गई कि बरकत दिया गया जो आग में (जलवा अफ़रोज़ है) जो उस के आस पास है (मूसा अ) और पाक है अल्लाह सारे जहानों का परवरदिगार। (8)
ऐ मूसा (अ) हक़ीक़त यह है कि मैं ही अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला हूँ। (9)
और तू अपना अ़सा (नीचे) डाल दे पस जब उस ने उसे लहराता हुआ देखा गोया वह सांप है तो (मूसा अ) पीठ फेर कर लौट गया और उस ने मुड़ कर न देखा, (इरशाद हुआ) ऐ मूसा (अ)! तू ख़ौफ़ न खा, बेशक मेरे पास रसूल ख़ौफ़ नहीं खाते। (10)
मगर जिस ने ज़ुल्म किया, फिर उस ने बुराई के बाद उसे भलाई से बदल डाला तो बेशक मैं बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान हूँ। (11)
और अपना हाथ अपने गरेबान में डाल वह किसी ऐब के बग़ैर सफ़ेद रोशन (हो कर) निकलेगा, नौ (9) निशायिंन में से (यह दो मोजिज़े ले कर) फ़िरऔन और उस की क़ौम की तरफ़ (जा), बेशक वह नाफ़रमान क़ौम हैं। (12)
फिर जब उन के पास आईं हमारी निशानियां आँखे खोलने वाली, वह बोले यह खुला जादू है। (13)
हालांकि उन के दिलों को उस का यक़ीन था, उन्हों ने उस का इन्कार किया ज़ुल्म और तकब्बुर से। तो देखो! फ़साद करने वालों का कैसा अन्जाम हुआ? (14)
और तहक़ीक़ हम ने दिया दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) को इल्म, और उन्हों ने कहा तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह जिस ने हमें फ़ज़ीलत दी अक्सर अपने मोमिन बन्दों पर। (15)
और सुलेमान (अ), दाऊद (अ) का वारिस हुआ, और उस ने कहा ऐ लोगो! मुझे सिखाई गई है परिन्दों की बोली, और हमें हर चीज़ (नेमत) से दी गई है, बेशक यह खुला फ़ज़्ल है। (16)

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾

17	तरतीब में रखे जाते थे	पस वह	और परिन्दे	और इन्सान	जिन्न	से	उस का लशकर	सुलेमान (अ) के लिए	और जमा किया गया

حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا

तुम दाख़िल हो	ऐ चींटियों	एक चींटी	कहा	चींटियों का मैदान	पर	आए	जब वह	यहां तक कि

مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾

18	न जानते हों (उन्हें मालूम न हो)	और वह	और उस का लशकर	सुलेमान (अ)	न रौन्द डाले तुम्हें	अपने घरों (बिलों) में

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ

कि मैं शुक्र अदा करूँ	मुझे तौफ़ीक़ दे	ऐ मेरे रब	और कहा	उस की बात	से	हँसते हुए	तो वह मुसकुराया

نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا

मैं नेक काम करूँ	और यह कि	मेरे माँ बाप	और पर	मुझ पर	तू ने इन्आम फ़रमाई	वह जो	तेरी नेमत

تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ

और उस ने ख़बर ली (जाइज़ा लिया)	19	नेक (जमा)	अपने बन्दे	में	अपनी रहमत से	और मुझे दाख़िल फ़रमा	तू वह पसंद करे

الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ﴿٢٠﴾

20	ग़ाइब हाने वाले	से	क्या वह है	हुद हुद	मैं नहीं देखता	क्या है	तो उस ने कहा	परिन्दे

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاْذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ

सनद (कोई वजह)	या उसे ज़रूर लानी चाहिए	या उसे ज़ुबह कर डालूँगा	सख़्त	सज़ा	अलबत्ता मैं ज़रूर उसे सज़ा दूँगा

مُّبِيْنٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ

तुम को मालूम नहीं वह	वह जो	मैं ने मालूम किया है	फिर कहा	थोड़ी सी	सो उस ने देर की	21	वाज़ेह (माकूल)

وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ

वह बादशाहत करती है उन पर	एक औरत	पाया (देखा)	बेशक मैं ने	22	यक़ीनी	एक ख़बर	सबा	से	और मैं तुम्हारे पास लाया हूँ

وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا

और उस की क़ौम	मैं ने पाया है उसे	23	बड़ा	एक तख़्त	और उस के लिए	हर शै	और दी गई है

يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ

उन के आमाल	शैतान	उन्हें	और आरास्ता कर दिखाए हैं	अल्लाह के सिवा	सूरज को	वह सिज्दा करते हैं

فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ

वह सिज्दा करते अल्लाह को	कि नहीं	24	राह नहीं पाते	सो वह	रास्ते से	पस रोक दिया उन्हें

الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ

जो तुम छुपाते हो	और जानता है	और ज़मीन	आस्मानों में	छुपी हुई	निकालता है	वह जो

وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾ السجدة

26	अर्शे अज़ीम	रब	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	अल्लाह	25	तुम ज़ाहिर करते हो	और जो

السجدة ٢٦

और सुलेमान (अ) के लिए उस का लशकर जिन्नों, इन्सानों और परीन्दों का जमा किया गया, पस वह तरतीब में रखे जाते थे। (17) यहां तक कि वह चींटियों के मैदान में आए, एक चींटी ने कहा, ऐ चीटियों! तुम अपने बिलों में दाख़िल हो जाओ, (कहीं) सुलेमान (अ) और उस का लशकर तुम्हें रौन्द न डाले और उन्हें ख़बर भी न हो। (18) तो वह हँसते हुए मुसकुराया उस की बात से, और कहा ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र अदा करूँ जो तू ने मुझ पर इन्आम फ़रमाई है, और मेरे माँ बाप पर, और यह कि मैं नेक काम करूँ जो तू पसंद करे और अपनी रहमत से मुझे अपने नेक बन्दों में दाख़िल फ़रमा ले। (19) और उस ने परिन्दों का जाइज़ा लिया तो कहा क्या (बात) है मैं हुद हुद को नहीं देखता, क्या वह ग़ाइब हो जाने वालों में से है? (20) अलबत्ता मैं उसे ज़रूर सख़्त सज़ा दूँगा या उसे ज़ुबह कर डालूँगा, या उसे ज़रूर कोई माकूल वजह मेरे पास लानी (पेश करनी) चाहिए। (21) सो उस (हुद हुद) ने थोड़ी सी देर की, फिर कहा मैं ने मालूम किया है वह जो तुम को मालूम नहीं, और मैं तुम्हारे पास सबा से एक यक़ीनी ख़बर लाया हूँ। (22) बेशक मैं ने एक औरत को देखा है, वह उन पर बादशाहत करती है, और (उसे) हर शै दी गई है, और उस के लिए एक बड़ा तख़्त है। (23) मैं ने उसे और उस की क़ौम को अल्लाह के सिवा (अल्लाह को छोड़ कर) सूरज को सिज्दा करते पाया है, और शैतान ने उन्हें आरास्ता कर दिखाया है उन के अमल, पस उन्हें (सीधे) रास्ते से रोक दिया है सो वह राह नहीं पाते। (24) और अल्लाह को (क्यों) सिज्दा नहीं करते? वह जो आस्मानों में और ज़मीन में छुपी हुई (चीज़ों को) निकालता है, और जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। (25) अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अर्शे अज़ीम का मालिक है। (26)

قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ

मेरा ख़त	ले जा	27	झूटे	से	तू है	या	क्या तू ने सच कहा	उस (सुलेमान अ) ने कहा अभी हम देख लेंगे

هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ

वह कहने लगी	28	वह जवाब देते हैं	क्या	फिर देख	उन से	फिर लौट आ	उन की तरफ़	पस उसे डाल दे	यह

يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْٓ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ

और बेशक वह	सुलेमान (अ)	से	बेशक वह	29	बा वक़्अत	ख़त	मेरी तरफ़	डाला गया	बेशक मेरी तरफ़	ऐ सरदारो!

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾

ع ٢ ١٧ ١٧

31	फ़रमांबरदार हो कर	और मेरे पास आओ	मुझ पर	यह कि तुम सरकशी न करो	30	रहम करने वाला	निहायत मेहरबान	नाम से अल्लाह के

قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْٓ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا

किसी मामला	फ़ैसला करने वाली	मैं नहीं हूँ	मेरे मामले में	मुझे राए दो	ऐ सरदारो!	वह बोली

حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ

और बड़े लड़ने वाले	क़ुव्वत वाले	हम	वह बोले	32	तुम मौजूद हो	जब तक

وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ

बादशाह (जमा)	बेशक	वह बोली	33	तुझे हुक्म करना है	क्या	तू देख ले	और फ़ैसला तेरी तरफ़ (तेरे इख़्तियार में)

اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْٓا اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ اَذِلَّةً ۚ

ज़लील	वहां के	मुअज़्ज़िज़ीन	और कर दिया करते हैं	उसे तबाह कर देते हैं	कोई बस्ती	जब दाख़िल होते हैं

وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ

क्या (जवाब) ले कर लौटते हैं	फिर देखती हूँ	एक तोहफ़ा	उन की तरफ़	भेजने वाली	और बेशक मैं	34	वह करते हैं	और उसी तरह

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ۗ فَمَآ

पस जो	माल से	क्या तुम मेरी मदद करते हो	उस ने कहा	सुलेमान (अ)	आया	पस जब	35	क़ासिद

اٰتٰىنِيَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ

तू लौट जा	36	ख़ुश होते हो	अपने तोहफ़े से	तुम	बल्कि	उस ने तुम्हें दिया	उस से जो	बेहतर	मुझे दिया अल्लाह ने

اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ

वहां से	और ज़रूर निकाल देंगे उन्हें	उस की	उन को	न ताक़त होगी	ऐसा लशकर	हम ज़रूर लाएंगे उन पर	उन की तरफ़

اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا

उस का तख़्त	मेरे पास लाएगा	तुम में से कौन	उस (सुलेमान अ) ने कहा ऐ सरदारो!	37	ख़ार होंगे	और वह	ज़लील कर के

قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ

मैं आप के पास ले आऊंगा	जिन्नात से	एक क़वी हैकल	कहा	38	फ़रमांबरदार हो कर	वह आए मेरे पास	कि	इस से क़ब्ल

بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾

39	अमानतदार	अलबत्ता क़ुव्वत वाला	उस पर	और बेशक मैं	अपनी जगह से	कि आप खड़े हों	इस से क़ब्ल	उस को

सुलेमान (अ) ने कहा, हम अभी देख लेंगे क्या तू ने सच कहा है? या तू झूटों में से है (झूटा है)? (27)
मेरा यह ख़त ले जा, पस यह उन की तरफ़ डाल दे, फिर उन से लौट आ, फिर देख वह क्या जवाब देते हैं! (28)
वह औरत कहने लगी, ऐ सरदारो! बेशक मेरी तरफ़ एक बा वक़्अत ख़त डाला गया है। (29)
बेशक वह सुलेमान (अ) (की तरफ़) से है और बेशक वह (यूँ है) "अल्लाह के नाम से जो रहम करने वाला निहायत मेहरबान है"। (30)
यह कि मुझ पर (मेरे मुक़ाबले में) सरकशी न करो, और मेरे पास आओ फ़रमांबरदार हो कर। (31)
वह बोली, ऐ सरदारो! मेरे मामले में मुझे राए दो, मैं किसी मामले में फ़ैसला करने वाली नहीं (फ़ैसला नहीं करती) जब तक तुम मौजूद (न) हो। (32)
वह बोले हम क़ुव्वत वाले, बड़े लड़ने वाले हैं, और फ़ैसला तेरे इख़्तियार में है, तू देख ले तुझे क्या हुक्म करना है। (33)
वह बोली, बेशक जब बादशाह किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे तबाह कर देते हैं, और वहां के मुअज़्ज़िज़ीन को ज़लील कर दिया करते हैं, और वह उसी तरह करते हैं। (34)
और बेशक मैं उन की तरफ़ एक तोहफ़ा भेजने वाली हूँ, फिर देखती हूँ क्या जवाब ले कर लौटते हैं क़ासिद। (35)
पस जब सुलेमान (अ) के पास क़ासिद आया तो उस ने कहा कि तुम माल से मेरी मदद करते हो? पस जो अल्लाह ने मुझे दिया है वह बेहतर है उस से जो उस ने तुम्हें दिया है, बल्कि तुम अपने तोहफ़े से ख़ुश होते हो। (36)
तू उन की तरफ़ लौट जा, सो हम उन पर ज़रूर लाएंगे ऐसा लशकर जिस (के मुक़ाबले) की उन्हें ताक़त न होगी, और हम ज़रूर उन्हें वहां से ज़लील कर के निकाल देंगे। और वह ख़ार होंगे। (37)
सुलेमान (अ) ने कहा ऐ सरदारो! तुम में कौन उस का तख़्त मेरे पास लाएगा? इस से क़ब्ल कि वह मेरे पास फ़रमांबरदार हो कर आएं। (38)
कहा जिन्नात में से एक क़वी हैकल ने, बेशक मैं उस को आप के पास इस से क़ब्ल ले आऊंगा कि आप अपनी जगह से खड़े हों, मैं बेशक उस पर अलबत्ता क़ुव्वत वाला, अमानतदार हूँ। (39)

قَالَ الَّذِیْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ

क़ब्ल	मैं उस को तुम्हारे पास ले आऊंगा	मैं	किताब	से-का	इल्म	उस के पास	उस ने जो	कहा

اَنْ یَّرْتَدَّ اِلَیْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ

उस ने कहा	अपने पास	रखा हुआ	पस जब सुलेमान (अ) ने उसे देखा	तुम्हारी निगाह (पलक झपके)	तुम्हारी तरफ़	कि फिर आए

هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّیْ ۫ لِیَبْلُوَنِیْۤ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ

और जिस	या नाशुक्री करता हूँ	आया मैं शुक्र करता हूँ	ताकि मुझे आज़माए	मेरे रब का फ़ज़्ल	से	यह

شَكَرَ فَاِنَّمَا یَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّیْ غَنِیٌّ

बेनियाज़	मेरा रब	तो बेशक	नाशुक्री की	और जिस	अपनी ज़ात के लिए	शुक्र करता है	तो पस वह	शुक्र किया

كَرِیْمٌ ﴿٤٠﴾ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِیْۤ اَمْ تَكُوْنُ

या होती है	आया वह राह पाती (समझ जाती) है	हम देखें	उस का तख़्त	उस के लिए	शकल बदल दो	उस ने कहा	40	करम करने वाला

مِنَ الَّذِیْنَ لَا یَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾ فَلَمَّا جَآءَتْ قِیْلَ اَهٰكَذَا

क्या ऐसा ही है	कहा गया	वह आई	पस जब	41	राह नहीं पाते	जो लोग	से

عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِیْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا

इस से क़ब्ल	इल्म	और हमें दिया गया	वही	गोया कि यह	वह बोली	तेरा तख़्त

وَكُنَّا مُسْلِمِیْنَ ﴿٤٢﴾ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के सिवा	वह परस्तिश करती थी	जो	और उस ने उस को रोका	42	मुसलमान-फ़रमांबरदार	और हम हैं

اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِیْنَ ﴿٤٣﴾ قِیْلَ لَهَا ادْخُلِی الصَّرْحَ ۚ

महल	तू दाख़िल हो	उस से	कहा गया	43	काफ़िरों	क़ौम से	थी	बेशक वह

فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَیْهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ

बेशक यह	उस ने कहा	अपनी पिंडलियाँ	से	और खोल दी	गहरा पानी	उसे समझा	उस ने उस को देखा	पस जब

صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِیْرَ ؕ قَالَتْ رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ

अपनी जान	बेशक मैं ने ज़ुल्म किया	ऐ मेरे रब	वह बोली	शीशे (जमा)	से	जुड़ा हुआ	महल

ع ٣ ١٣ ١٨ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَیْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٤٤﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰی

तरफ़	और तहक़ीक़ हम ने भेजा	44	तमाम जहानों का रब	अल्लाह के लिए	सुलेमान (अ)	साथ	और मैं ईमान लाई

ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِیْقٰنِ

दो फ़रीक़ हो गए	वह	पस नागहां	अल्लाह की इबादत करो	कि	सालेह (अ)	उन के भाई	समूद

یَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ یٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّیِّئَةِ قَبْلَ

पहले	बुराई के लिए	तुम जल्दी करते हो	क्यों	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	45	बाहम झगड़ने लगे

الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

46	तुम पर रहम किया जाए	ताकि तुम	तुम बख़्शिश मांगते अल्लाह से	क्यों नहीं	भलाई

उस शख़्स ने कहा जिस के पास किताब (इलाही) का इल्म था, मैं उस को तुम्हारे पास उस से क़ब्ल ले आऊंगा कि तुम्हारी आँख पलक झपके, पस जब सुलेमान (अ) ने (अचानक) उसे अपने पास रखा हुआ देखा तो उस ने कहा यह मेरे रब के फ़ज़्ल से है, ताकि वह मुझे आज़माए आया मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री करता हूँ? और जिस ने शुक्र किया तो पस वह अपनी ज़ात के लिए शुक्र करता है, और जिस ने नाशुक्री की तो बेशक मेरा रब बेनियाज़, करम करने वाला है। (40)

उस ने कहा उस (मलिका के इम्तिहान के लिए) उस के तख़्त की शकल बदल दो, हम देखें कि आया वह समझ जाती है या उन लोगों में से होती है जो नहीं समझते। (41)

पस जब वह आई (उस से) कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है? वह बोली गोया कि यह वही है और हमें इस से पहले ही इल्म दिया गया (इल्म हो गया था) और हम हैं मुसलमान (फ़रमांबरदार)। (42)

और उस को (ईमान लाने से) रोक रखा था उन माबूदों ने जिन की वह अल्लाह के सिवा परस्तिश करती थी, क्योंकि वह काफ़िरों की क़ौम से थी। (43)

उस से कहा गया कि महल में दाख़िल हो, जब उस (मलिका) ने उस (के फ़र्श) को देखा तो उसे गहरा पानी समझा और (पाएंचे उठा कर) अपनी पिंडलियाँ खोल दीं, उस (सुलेमान अ) ने कहा बेशक यह शीशों से जुड़ा हुआ महल है, वह बोली ऐ मेरे रब! बेशक मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, और (अब) मैं सुलेमान (अ) के साथ (सुलेमान अ के तरीक़े पर) तमाम जहानों के रब अल्लाह पर ईमान लाई। (44)

और तहक़ीक़ हम ने (क़ौम) समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अ) को भेजा कि अल्लाह की इबादत करो, पस नागहां वह दो फ़रीक़ हो गए बाहम झगड़ने लगे। (45)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी करते हो? क्यों नहीं तुम अल्लाह से बख़्शिश मांगते, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (46)

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۭ قَالَ طٰۗىِٕرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ

बल्कि	अल्लाह के पास	तुम्हारी बदशगुनी	उस ने कहा	तेरे साथ (साथी)	और वह जो	तुझ से	बुरा शगुन	वह बोले

اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ۝٤٧ وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ

वह फ़साद करते थे	शख़्स	नौ (9)	शहर में	और थे	47	आज़माए जाते हो	एक क़ौम	तुम

فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ۝٤٨ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ

अलबत्ता हम ज़रूर शबख़ून मारेंगे उस पर	अल्लाह की	तुम बाहम क़सम खाओ	वह कहने लगे	48	और इस्लाह नहीं करते थे		ज़मीन (मुल्क) में

وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝٤٩

49	अलबत्ता सच्चे हैं	और बेशक हम	उस के घर वाले	हलाकत के वक़्त	हम मौजूद न थे	उस के वारिसों से	फिर ज़रूर हम कह देंगे	और उस के घर वाले

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٥٠ فَانْظُرْ كَيْفَ

कैसा	पस देखो	50	न जानते थे	और वह	एक तदबीर	और हम ने ख़ुफ़िया तदबीर की	एक तदबीर	और उन्हों ने मक्र किया

كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٥١ فَتِلْكَ

अब यह	51	सब को	और उन की क़ौम	हम ने तबाह करदिया उन्हें	कि हम	उन का मक्र	अन्जाम	हुआ

بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةً ۢ بِمَا ظَلَمُوْا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٥٢

52	लोगों के लिए जो जानते हैं	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	उन के ज़ुल्म के सबब	गिरे पड़े	उन के घर

وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝٥٣ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ

जब उस ने कहा	और लूत (अ)	53	और वह परहेज़गारी करते थे	वह ईमान लाए	वह लोग जो	और हम ने नजात दी

لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝٥٤ اَىِٕنَّكُمْ

क्या तुम	54	देखते हो	और तुम	बेहयाई	क्या तुम आगए	अपनी क़ौम से

لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَاۗءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ

लोग	तुम	बल्कि	औरतों के सिवा (औरतो को छोड़ कर)	शहवत रानी के लिए?	मर्दों के पास	आते हो

تَجْهَلُوْنَ ۝٥٥ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا

निकाल दो	उन्हों ने कहा	मगर-सिर्फ़ यह कि	उस की क़ौम	जवाब	था	पस न	55	जहालत करते हो

اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝٥٦ فَاَنْجَيْنٰهُ

सो हम ने उसे बचा लिया	56	पाकीज़गी पसंद करते हैं	लोग	बेशक वह	अपना शहर	से	लूत (अ) के साथी

وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۢ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٥٧ وَاَمْطَرْنَا

और हम ने बरसाई	57	पीछे रह जाने वाले	से	हम ने उसे ठहरा दिया था	उस की बीवी	सिवाए	और उस के घर वाले

عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَاۗءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝٥٨ ع قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ ٤ ١٤ ١٩

और सलाम	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	फ़रमा दें	58	डराए गए	बारिश	सो क्या ही बुरा	एक बारिश	उन पर

عَلٰٓى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ۭ ءٰۗللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٥٩

59	वह शरीक ठहराते हैं	या जो	बेहतर	क्या अल्लाह	चुन लिया	वह जिन्हें	उस के बन्दों पर

वह बोले हम ने तुझ से और तेरे साथियों से बुरा शगुन लिया है, उस ने कहा तुम्हारी बदशगुनी अल्लाह के पास (अल्लाह की तरफ़ से) है बल्कि तुम एक क़ौम हो (जो) आज़माए जाते हो। (47)
और शहर में थे नौ (9) शख़्स वह मुल्क में फ़साद करते थे, और इस्लाह न करते थे। (48)
वह कहने लगे तुम बाहम अल्लाह की क़सम खाओ अलबत्ता हम ज़रूर उस पर और उस के घर वालों पर शबख़ून मारेंगे और फिर उस के वारिसों को कह देंगे, हम उस के घर वालों की हलाकत के वक़्त मौजूद न थे, और बेशक हम अलबत्ता सच्चे हैं। (49)
और उन्हों ने एक मक्र किया और हम ने (भी) एक ख़ुफ़िया तदबीर की और वह न जानते थे (बेख़बर) थे। (50)
पस देखो उन के मक्र का अन्जाम कैसा हुआ! कि हम ने उन्हें और उन की क़ौम सब को हलाक कर डाला। (51)
अब यह उन के घर हैं, गिरे पड़े, उन के ज़ुल्म के सबब, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानी है जो जानते हैं। (52)
और हम ने उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और वह परहेज़गारी करते थे। (53)
और (याद करो) जब लूत (अ) ने अपनी क़ौम से कहा क्या तुम बेहयाई पर उतर आए हो? और तुम देखते हो। (54)
क्या तुम औरतों को छोड़ कर मर्दों के पास शहवत रानी के लिए आते हो? बल्कि तुम लोग जहालत करते हो। (55)
पस उस की क़ौम का जवाब सिर्फ़ यह था कि लूत (अ) के साथियों को निकाल दो अपने शहर से, बेशक यह लोग पाकीज़गी पसंद करते हैं। (56)
सो हम ने उसे बचा लिया और उस के घर वालों को सिवाए उस की बीवी के, उसे हम ने पीछे रह जाने वालों में से ठहरा दिया था। (57)
और हम ने उन पर एक बारिश बरसाई, सो क्या ही बुरी बारिश थी डराए गए लोगों पर। (58)
आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और उस के बन्दों पर सलाम हो जिन्हें उस ने चुन लिया, क्या अल्लाह बेहतर है या वह जिन्हें वह शरीक ठहराते हैं? (59)